शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर
महाराष्ट्र

दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र

बी. ए. भाग– 2 हिंदी सत्र 3 – IKS

हिंदी साहित्य भक्ति परंपरा : गुरू महिमा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार सुधारित पाठ्यक्रम
(शैक्षिक वर्ष 2025-26 से)

© **कुलसचिव,** शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर (महाराष्ट्र)
प्रथम संस्करण : 2025
बी. ए. भाग 2 हिंदी IKS - हिंदी साहित्य भक्ति परंपरा : गुरू महिमा
सभी अधिकार विश्वविद्यालय के अधीन। शिवाजी विश्वविद्यालय की अनुमति के बिना किसी भी सामग्री की नकल न करें।

प्रतियाँ : 200

■

प्रकाशक :
डॉ. व्ही. एन. शिंदे
कुलसचिव,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - 416 004.

■

मुद्रक :
श्री. बी. पी. पाटील
अधीक्षक,
शिवाजी विश्वविद्यालय मुद्रणालय,
कोल्हापुर - 416 004.

■

ISBN- 978-93-49570-60-3

★ दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र और शिवाजी विश्वविद्यालय की जानकारी निम्नांकित पते पर मिलेगी- शिवाजी विश्वविद्यालय, विद्यानगर, कोल्हापुर-416 004. (भारत)

दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

■ सलाहकार समिति ■

प्रो. (डॉ.) डी. टी. शिर्के
कुलगुरू,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) पी. एस. पाटील
प्र-कुलगुरू,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) प्रकाश पवार
राज्यशास्त्र अधिविभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) एस. विद्याशंकर
कुलगुरू, केएसओयू
मुक्तगंगोत्री, म्हैसूर, कर्नाटक-५७० ००६

डॉ. राजेंद्र कांकरिया
जी-२/१२१, इंदिरा पार्क,
चिंचवडगांव, पुणे-४११ ०३३

प्रो. (डॉ.) सीमा येवले
गीत-गोविंद, फ्लॅट नं. २, ११३९ साईक्स एक्स्टेंशन,
कोल्हापुर-४१६००१

डॉ. संजय रत्नपारखी
डी-१६, शिक्षक वसाहत, विद्यानगरी, मुंबई विश्वविद्यालय,
सांताक्रुझ (पु.) मुंबई-४०० ०९८

प्रो. (डॉ.) कविता ओझा
संगणकशास्त्र अधिविभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) चेतन आवटी
तंत्रज्ञान अधिविभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) एम. एस. देशमुख
अधिष्ठाता, मानव्य विद्याशाखा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) एस. एस. महाजन
अधिष्ठाता, वाणिज्य व व्यवस्थापन विद्याशाखा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) ज्योती जाधव
प्रभारी अधिष्ठाता, विज्ञान व तंत्रज्ञान विद्याशाखा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्राचार्या (डॉ.) श्रीमती एम. व्ही. गुळवणी
प्रभारी अधिष्ठाता, आंतर-विद्याशाखीय अभ्यास विद्याशाखा
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

डॉ. व्ही. एन. शिंदे
कुलसचिव,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

डॉ. ए. एन. जाधव
संचालक, परीक्षा व मूल्यमापन मंडळ,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

श्रीमती सुहासिनी सरदार पाटील
वित्त व लेखा अधिकारी,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

डॉ. के. बी. पाटील (सदस्य सचिव)
प्र. संचालक, दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

■ हिंदी अध्ययन मंडल ■

अध्यक्ष

प्रो. (डॉ.) साताप्पा शामराव सावंत
विलिंग्डन कॉलेज, सांगली

सदस्य

- **प्रो. (डॉ.) नितीन चंद्रकांत धवडे**
मुधोजी कॉलेज, फलटण, जि. सातारा

- **डॉ. मनिषा बाळासाहेब जाधव**
आर्टस अॅण्ड कॉमर्स कॉलेज, ११७, शुक्रवार पेठ, सातारा-४१५ ००२.

- **प्रो. (डॉ.) वर्षाराणी निवृत्ती सहदेव**
श्री विजयसिंह यादव कॉलेज, पेठ वडगाव, जि. कोल्हापुर

- **प्रो. (डॉ.) हणमंत महादेव सोहनी**
सदाशिवराव मंडलीक महाविद्यालय, मुरगुड, ता. कागल, जि. कोल्हापुर

- **प्रो. (डॉ.) अशोक विठोबा बाचुळकर**
आजरा महाविद्यालय, आजरा, जि. कोल्हापुर

- **डॉ. भास्कर उमराव भवर**
कर्मवीर हिरे आर्टस, सायन्स, कॉमर्स अॅण्ड एज्युकेशन कॉलेज, गारगोटी, ता. भुदरगड, जि. कोल्हापुर

- **डॉ. संग्राम यशवंत शिंदे**
आमदार शशिकांत शिंदे महाविद्यालय, मेढा, ता. जावळी, जि. सातारा

- **प्रो. (डॉ.) अनिल मारुती साळुंखे**
यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, करमाळा, जि. सोलापुर-४१३२०३

- **डॉ. गजानन सुखदेव चव्हाण**
श्रीमती जी.के.जी. कन्या महाविद्यालय, जयसिंगपुर, ता. शिरोळ, जि. कोल्हापुर

- **प्रो. (डॉ.) सिद्राम कृष्णा खोत**
प्रा. डॉ. एन. डी. पाटील महाविद्यालय, मलकापुर, जि. कोल्हापुर

- **प्रो. (डॉ.) उत्तम लक्ष्मण थोरात**
आदर्श कॉलेज, विटा, जि. सांगली

- **डॉ. परशराम रामजी रगडे**
शंकरराव जगताप आर्टस अॅण्ड कॉमर्स कॉलेज, वाघोली, ता. कोरेगाव, जि. सातारा

अपनी बात

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की दूरशिक्षा योजना के अंतर्गत बी. ए. भाग–2 हिंदी विषय के छात्रों के लिए निर्मित अध्ययन सामग्री नियमित रुप से प्रवेश न ले पाने वाले छात्रों की असुविधा को दूर करने के संकल्प का सुफल है। इसमें एक ओर विश्वविद्यालय की सामाजिक संवेदनशीलता दिखाई देती है, तो दूसरी ओर शिक्षा से वंचित छात्रों को अध्ययन सामग्री सुविधा प्रदान करने की प्रतिबद्धता। बी. ए. 2 के छात्र प्रस्तुत स्वयं–अध्ययन सामग्री से लाभान्वित होंगे, यह विश्वास है।

दूरशिक्षा के छात्रों का महाविद्यालयों तथा अध्यापकों से प्रत्यक्ष या परोक्ष रुप से कोई संबंध नहीं आता। उनकी इस स्थिति को ध्यान में रखते हुए अध्ययन सामग्री को सरल और सुबोध भाषा में प्रस्तुत किया गया है। साथ ही पाठ्यक्रम, प्रश्नपत्र का स्वरुप तथा अंक–वितरण को ध्यान में रखकर अध्ययन–सामग्री को आवश्यकतानुसार विस्तृत तथा सूक्ष्म रुप से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। हमें आशा ही नहीं, बल्कि विश्वास भी हैं कि प्रस्तुत अध्ययन सामग्री बी. ए. 2 के छात्रों के लिए उपादेय सिद्ध होगी।

प्रस्तुत सामग्री सामूहिक प्रयास का फल है। इकाई लेखकों ने अपनी–अपनी इकाईयों का लेखन समय पर पूरा कर इसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। शिवाजी विश्वविद्यालय के मा. कुलगुरू, कुलसचिव, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय विकास मंडल के संचालक, दूरशिक्षा विभाग के संचालक एवं उनके सभी सहयोगी सदस्यों ने समय–समय पर आवश्यक सहयोग दिया। अतः इन सभी के प्रति आभार प्रकट करना हमारा कर्तव्य है।

धन्यवाद।

– संपादक

इकाई लेखक	**इकाई**
★ **प्रो. (डॉ.) नितीन धवडे,** मुधोजी कॉलेज फलटण, जि. फलटण	**1**
★ **डॉ. मच्छिंद्र कुंभार,** मातोश्री बयाबाई कदम महाविद्यालय, कडेगाव, ता. कडेगाव, जि.सांगली	**2**

■ **संपादक** ■

प्रो. (डॉ.) नितीन धवडे,
मुधोजी कॉलेज फलटण, जि. फलटण

प्रो. (डॉ.) एस.एस. सावंत
विलिंग्ड कॉलेज, सांगली, जि. सांगली

अनुक्रमणिका

इकाई	पाठ्यविषय	पृष्ठ
	हिंदी साहित्य भक्ति परंपरा : गुरू महिमा	
1.	**गुरु परंपरा**	1
2.	**गुरु महिमा**	29

हर इकाई की शुरूआत उद्‌देश्य से होगी, जिससे दिशा और आगे के विषय सूचित होंगे-

(१) इकाई में क्या दिया गया है?

(२) आपसे क्या अपेक्षित है?

(३) विशेष इकाई के अध्ययन के उपरांत आपको किन बातों से अवगत होना अपेक्षित है?

स्वयं-अध्ययन के लिए कुछ प्रश्न दिए गए हैं, जिनके अपेक्षित उत्तरों को भी दर्ज किया है। इससे इकाई का अध्ययन सही दिशा से होगा। आपके उत्तर लिखने के पश्चात् ही स्वयं-अध्ययन के अंतर्गत दिए हुए उत्तरों को देखें। आपके द्‌वारा लिखे गए उत्तर (स्वाध्याय) मूल्यांकन के लिए हमारे पास भेजने की आवश्यकता नहीं है। आपका अध्ययन सही दिशा से हो, इसलिए यह अध्ययन सामग्री (Study Tool) उपयुक्त सिद्‌ध होगी।

इकाई क्र. 1

गुरु परंपरा

1.1 उद्देश्य
1.2 प्रस्तावना
1.3 विषय विवेचन
1.3.1 भारतीय साहित्य : गुरु परंपरा
1.3.2 हिंदी साहित्य में भक्ति परंपरा
1.3.3 भक्ति परंपरा में गुरु महिमा
1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न ।
1.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ ।
1.6 स्वयं अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर ।
1.7 सारांश ।
1.8 स्वाध्याय ।
1.9 क्षेत्रीय कार्य ।
1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए ।

1.1 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने से आप -

1. भारतीय साहित्य की गुरु परंपरा से परिचित होंगे ।
2. हिंदी साहित्य में भक्ति परंपरा से अवगत होंगे ।
3. भक्ति परंपरा में संत कवियों ने अपने काव्य में गुरु की महिमा का जो वर्णन किया है, उससे परिचित होंगे ।
4. संत साहित्य के गुरु महिमा के महत्व को जान सकेंगे ।
5. संत कवियों के गुरु महिमा की विशेषताओं से अवगत होंगे ।
6. गुरु परंपरा में गुरु महिमा का महत्व जान सकेंगे ।

1.2 प्रस्तावना

गुरु परंपरा का अर्थ है ज्ञान और अनुभव को एक पीढ़ी द्वारा दूसरी पीढ़ी को सौंपना । गुरु परंपरा में गुरु का स्थान बहुत ही महत्वपूर्ण माना गया है । गुरु-शिष्य परंपरा यह हमारे भारत देश की एक प्राचीन परंपरा रही है, जो शिक्षा, ज्ञान और आध्यात्मिकता को अगली पीढ़ी को सौंपती हैं । इस परंपरा में गुरु अपना अर्जित ज्ञान अपने शिष्य को देने का प्रयास करता है । एक दृष्टि से किसी भी शिष्य के लिए उसका गुरु एक मार्गदर्शक, जीवन में सही दिशा की ओर आगे बढ़ने की प्रेरणा देनेवाला और अपने ज्ञान से शिष्य को भी ज्ञानी बनानेवाला माना गया है । भारत के हिंदू, सिख, जैन और बौद्ध आदि धर्मों में यह परंपरा समान रूप से दिखाई देती है । भारतीय संस्कृति में हम देखते हैं कि गुरु अपने शिष्य को कोई शिक्षा देता है या कोई विद्या सिखाता है । शिक्षा प्राप्त करने के बाद वही शिष्य गुरु बनकर अगली पीढ़ी को, जो उसके शिष्य बने हैं, उन्हें वह शिक्षा प्रदान करता है । तात्पर्य यह की प्राचीन काल से आज तक गुरु-शिष्य परंपरा की यह शृंखला ज्ञान के सभी क्षेत्रों में पायी जाती है । इस दृष्टि से भारतीय तथा हिंदी साहित्य में इस गुरु परंपरा का अपना एक अलग एवं महत्वपूर्ण स्थान है ।

भारतीय मान्यता के अनुसार गुरु वह है, जो समाज के अज्ञान रूपी अंधकार को नष्ट कर ज्ञानरुपी प्रकाश को समाज में फैलाता है । अत: गुरु को ब्रह्म रूप प्रकाश भी माना गया है । गुरु केवल अपने ज्ञान से समाज सुधार एवं समाज को मार्गदर्शन ही नहीं करता रहा है, बल्कि समाज को क्रांति की दिशा दिखाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है । इसीलिए भारतीय संस्कृति में गुरु को बहुत ही आदर का स्थान प्राप्त है । इतना ही नहीं, गुरु का स्थान ईश्वर से भी ऊपर स्वीकार किया गया है । जैसे

''गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वर: ।
गुरुः साक्षात् पर ब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः।।''

इसी तरह भक्तिकालीन संत कवियों ने भी सद्‌गुरु का महत्व स्वीकार करते हुए उसे सर्वोपरी माना है । इन कवियों का विश्वास है कि ईश्वर की कृपा तभी प्राप्त होती है, जब गुरु की कृपा होती है । इसीलिए तो कबीर ने लिखा है,

''गुरु गोविंद दोहु खडे, काके लागु पाई,
बलिहारी गुरु आपनौ, जिन गोविंद दियो बताई ।''

इस तरह गुरु को ईश्वर से भी अधिक महत्व देना संत कवियों की एक सर्वमान्य विशेषत: है ।

1.3 विषय विवेचन

1.3.1 भारतीय साहित्य : गुरु परंपरा

भारतीय साहित्य में गुरु-शिष्य परंपरा एक महत्वपूर्ण और प्राचीन परंपरा रही है, जिसमें गुरु अपने ज्ञान और अनुभव को शिष्य को देते रहे हैं । इस परंपरा से न केवल ज्ञान का प्रसार होता रहा है, बल्कि आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विकास में भी इस परंपरा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है । वैदिक तथा पौराणिक काल से इस परंपरा का निर्वाह भारतीय साहित्य और संस्कृति में दिखाई देता है । भारतीय संस्कृति में सभी देवों के देव महादेव जी को प्रथम गुरु के रूप में मान्यता दी गई है । महादेव जी के शिष्यों में सात ऋषियों का उल्लेख मिलता है - महर्षि अत्रि, जमदग्नि, कश्यप, विश्वामित्र, गौतम, भारद्वाज, वशिष्ठ । इन्होंने महादेव जी से ज्ञान प्राप्त कर सभी

दिशाओं में इसका प्रचार-प्रसार किया। इसके पश्चात् गुरु परंपरा में दत्तात्रेय का नाम उल्लेखनीय है।दत्तात्रेय में ईश्वर और गुरु दोनों रूपों का समावेश होने से उन्हें 'श्री गुरुदेव दत्त' कहा गया। आदि शंकराचार्य और गुरु गोरखनाथ भी इसी परंपरा के प्रचारक रह चुके हैं। गुरु परंपरा में ऋषियों एवं महर्षियों की भी एक परंपरा रही है, जैसे परशुराम, वशिष्ठ, विश्वामित्र, व्यास, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, अगस्त्य आदि इन सभी गुरुओं ने अपने ज्ञान को अपने शिष्यों को दिया। वैदिक युग के पहले आरंभ हुई यह परंपरा आज भी हमें दिखाई देती है। गोविंदपद के शिष्य शंकराचार्य, शंकारानंद के शिष्य विद्यारण्य, ईश्वर पुरी के शिष्य महाप्रभु चैतन्य, पूर्वानंद के शिष्य वीरजानंद, वीरजानंद के शिष्य दयानंद, रामकृष्ण परमहंस के शिष्य विवेकानंद इस प्रकार यह परंपरा अखंडित रूप में चली आ रही दिखाई देती है। इन महान गुरुओं के ज्ञान दान से भारत आज एक महान देश के रूप में स्थित है।

भारतीय साहित्य में गुरु परंपरा का उल्लेख प्राचीन काल से ही मिलता है। वेदों, उपनिषदों, रामायण, महाभारत और पुराणों में गुरु-शिष्य परंपरा के अनेक उदाहरण दिखाई देते हैं।

1) वेद :- वेदों में गुरु को ईश्वर के रुप में ही स्वीकार किया है। वैदिक साहित्य में ज्ञान और शिक्षा पर अत्यधिक बल दिया गया है और उसके लिए मार्गदर्शक के रूप में गुरु का होना अनिवार्य बताया गया है।

2) उपनिषद :- उपनिषदों में गुरु और शिष्य के संवादों के माध्यम से आत्मज्ञान और ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति का आग्रह दिखाई देता है। उपनिषदों के अनुसार एक गुरु ही हमें अपने मार्गदर्शन से आत्मज्ञान और ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति करा सकता है।

3) रामायण और महाभारत :- इन दोनों महाकाव्यों में हमें गुरु-शिष्य के अनेक उदाहरण मिलते हैं। जैसे - वशिष्ठ और राम, द्रोणाचार्य और अर्जुन आदि।

4) संत साहित्य :- भक्ति परंपरा के संत कवियों ने भी गुरु-शिष्य परंपरा को महत्व देते हुए अपनी रचनाओं में गुरु की महिमा का गान किया है। उनके अनुसार ज्ञान और ईश्वर की प्राप्ति गुरु के बिना असंभव है। अत: सभी संत कवि जीवन की सार्थकता के लिए गुरु का होना आवश्यक मानते हैं। उनका मानना है कि गुरु के आशीर्वाद के बिना हम हमारे कार्य में सफल नहीं हो सकते।

5) आधुनिक साहित्य :- आधुनिक साहित्य में भी गुरु-शिष्य परंपरा का महत्व दिखाई देता है। अनेक साहित्यकारों ने गुरु-शिष्य परंपरा के महत्व को तथा गुरु-शिष्य संबंधों को अपनी रचनाओं चित्रित किया है।

गुरु-शिष्य परंपरा को गुरुकुल व्यवस्था ने जीवित रखा। प्राचीन काल में यह कार्य प्रकृति के सानिध्य में होता रहा। इस तरह भारतीय ज्ञान परंपरा में गुरु परंपरा का महत्व सर्वमान्य है। 'स्कंदपुराण' में गुरु शब्द का अर्थ बताते हुए कहा गया है 'गु' का अर्थ है अंधकार और 'रु' का अर्थ है तेज प्रकाश। अर्थात-अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाला, अज्ञान को दूर कर ज्ञान का मार्ग दिखाने वाला गुरु कहलाता है। गुरु शिष्य परंपरा का सर्वोत्तम उदाहरण वेद हैं। पृथ्वी पर वेदों का निर्माण इसी परंपरा के अंतर्गत हुआ था। वेदों का सार उपनिषद को माना जाता है और उपनिषद शब्द का अर्थ है ज्ञान प्राप्ति के लिए गुरु के पास जाना। गुरु शिष्य परंपरा की मान्यता के अनुसार संस्कार पूर्व जन्म के हो सकते हैं, परंतु साधना और ज्ञान प्राप्ति के लिए गुरु का होना अनिवार्य है। शास्त्रोक्त एवं आध्यात्मिक ज्ञान गुरु के बिना पूरी तरह से नहीं मिल सकता। 'तैत्तिरिया संहिता' के अनुसार व्यक्ति को मुक्ति तभी मिल सकती है, जब वह गुरु के पास जाकर शिक्षा ग्रहण करें। 'मुंडकोपनिषद' में गुरु शिष्य परंपरा का विस्तार से उल्लेख मिलता है। भगवान श्री कृष्ण द्वारा अर्जुन को श्रीमद्भागवत गीता का

उपदेश इसी परंपरा की ओर संकेत करता है । भारतीय संस्कृति में गुरु शिष्य परंपरा के अंतर्गत गुरु शिष्य को शिक्षा देता है । बाद में वही शिष्य गुरु के रूप में दूसरे शिष्यों को शिक्षा देता है और यही परंपरा आगे चलती रही है । इसीलिए तो इसे गुरु शिष्य परंपरा कहते हैं । अद्वैत गुरु परंपरा उन गुरुओं की परंपरा है जो अद्वैत के दर्शन शास्त्र को मानते आये हैं । शंकराचार्य, वेद व्यास जी तथा महर्षि वशिष्ठ जी इसी परंपरा में आते हैं। उनके इस परंपरा में महान योगदान ने ही सदियों से चले आ रहे इस अद्वैत ज्ञान को अगली पीढ़ी के पास सुरक्षित रखा । इसी परंपरा के कारण ही उपनिषदों, भगवत् गीता तथा अन्य ज्ञान के स्रोतों में निहित ज्ञान उनके आगे आने वाली पीढ़ियों के पास हस्तांतरित हुआ है ।

प्राचीन काल में इस परंपरा का प्रचलन गुरुकुल एवं आश्रमों में रहा । 'प्रश्नोपनिषद' में ज्ञान प्राप्त करने के लिए गुरु के पास जाने का विधिवत मार्ग विस्तार से बताया गया है । जिसके अनुसार शिष्य समिधाएँ हाथ में लेकर नंगे पाँव चलकर गुरु के पास जाते थें । गुरु भी शिष्य की कठोर परीक्षा लेकर उसे अपना शिष्य बनाते थें । जिस प्रकार शिष्य उचित गुरु की खोज में रहते थें, वैसे ही गुरु भी योग्य शिष्य का चयन करते थें । ऋग्वेद और अथर्ववेद में शिष्य के गुणों का वर्णन मिलता है । अत: प्राचीन काल में इन गुणों से युक्त विद्यार्थी ही ज्ञान प्राप्ति के अधिकारी माने जाते थें ।

भारतीय साहित्य में आदिकाल से ही गुरु शिष्य परंपरा का प्रचलन रहा है । महाभारत, धर्म सूत्र और मनुस्मृति आदि में प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति का वर्णन मिलता है । प्राचीन काल में शिक्षा का उद्देश्य ज्ञानार्जन करना था । यही उद्देश्य वैदिक काल में भी मिलता है । भगवान श्री कृष्ण ने महर्षि संदीपनी के आश्रम में रहकर शिक्षा प्राप्त की । इसी प्रकार राम और लक्ष्मण ने गुरु विश्वामित्र से मार्गदर्शन लिया । इस तरह प्राचीन कालीन वेद और अन्य ग्रंथ भारतीय शिक्षा व्यवस्था की ओर संकेत करते हैं । उस समय के आश्रम और गुरुकुल एक दृष्टि से विद्यालय ही थें । यह गुरु परंपरा एक पक्षिय न रहकर द्वि-पक्षीय रही है । गुरु की महत्ता और शिष्य की ज्ञान प्राप्ति की प्रतिबद्धता, दोनों ही इस परंपरा के महत्वपूर्ण भाग रह चुके हैं । रामकृष्ण परमहंस और विवेकानंद, बिरजानंद और दयानंद, निवृत्तिनाथ और ज्ञानेश्वर, गोविंद पद और शंकराचार्य, रामानंद और कबीर, रविदास और मीराबाई, जनार्दन स्वामी और एकनाथ आदि गुरु-शिष्य की यह प्राचीन परंपरा बहुत समृद्ध और प्रसिद्ध रही है । जिसका प्रमुख कारण है गुरु में ज्ञान प्रदान करने और शिष्य में उसे आत्मसात करने की प्रामाणिक प्रवृत्ति थी।

भक्ति साहित्य में गुरु परंपरा :-

14 वीं शती से 17 वीं शती तक गुरु को जो प्रतिष्ठा एवं सम्मान भारतीय साहित्य में मिला है वह अन्य कालखंड में दिखाई नहीं देता । शिष्यों और गुरुओं ने जाति बंधन की जंजीर को तोड़ा । यह परंपरा पुराणों में भी मिलती है । रामानुजाचार्य इस दृष्टि से क्रांतिकारी आचार्य रहें । उनके गुरुओं में कांचीपूर्ण, महापूर्ण और गोष्टीपूर्ण निम्न जाति से थें । महापूर्ण के मार्गदर्शन में ही रामानुजाचार्य ने 'तमिल प्रबंधमाला' का अध्ययन किया था । संतों ने जिन ग्रंथों का संग्रह किया वह पोथियाँ भी गुरु पद को प्राप्त हुई । 'गुरु ग्रंथ साहिब' की प्रतिष्ठा गुरु पद पर हुई । 'दादू वाणी' दादू दयाल के मंदिरों में स्थापित हो गई । कबीर ने गुरु से संबंधित जो साखियाँ लिखी, वह जनमानस में प्रसारित हो गई । कबीर को गुरु के रूप में रामानंद मिले थें । रामानंद के सानिध्य में उन्हें जीवन दर्शन की प्राप्ति हुई । इसीलिए तो कबीर शीश देकर भी गुरु की प्राप्ति करना चाहते हैं ।

भक्ति आंदोलन को भारतीय साहित्य का सबसे बड़ा आंदोलन माना जाता है । इस आंदोलन से जुड़े सगुण और निर्गुण दोनों प्रकार के भक्त कवि संत है । निर्गुण संतों के साहित्य में परंपरा से पूजित देवी देवताओं को कोई स्थान नहीं है । उनके लिए तो एकमात्र पूजनीय गुरु है । सगुण भक्त कवियों के साहित्य में भी विशेष रूप से गुरु का स्मरण दिखाई देता है । 'बालकांड' के प्रारंभ में ही गुरु वंदना करते हैं तुलसीदास जी ने कहा है बड़े-बड़े साधक, सिद्ध और सुजान अपनी आँखों में सुअंजन लगाकर पर्वतों, वनों और भूतल के कौतुक को देख लेते हैं । इसका कारण यह है कि गुरु के चरणों की धुल कोमल और सुंदर काजल है, जो आँखों के लिए अमृत के समान है । इस काजल से नेत्र दोष दूर हो जाता है ।

निर्गुण भक्त संतों ने केवल गुरु को ही सर्वोपरी माना है । उनके साहित्य में 'गुरु के अंग' के रूप में कई अध्याय हैं । कबीर, नामदेव, दादू दयाल, रैदास तथा रज्जब जैसे संतों ने अपनी रचनाओं में गुरु को ही सर्वस्व माना । कबीर ने गुरु महिमा से संबंधित जो साखियाँ लिखी, वह जनमानस में रच बस गई । गुरु के प्रति कबीर का समर्पण इस दोहे में देखा जा सकता है -

''यह तन विष की बेलरी, गुरु अमृत की खान।
सिस दिए जो गुरु मिले, तो भी सस्ता जान ।।''

कबीर शीश देकर भी गुरु प्राप्त कर लेना चाहते हैं । संत रविदास भी गुरु को याद करते हुए ज्ञान के अक्षरों की बात करते हैं । संत दरिया साहब ने सद्गुरु के शब्द को पहचानने पर बल दिया है । उनके अनुसार सद्गुरु के शब्द को, उसके महत्व को जो नहीं पहचानता वह पक्षियों में कौवे की तरह होता है । संत रज्जब ने अपने ग्रंथ का आरंभ ही गुरु वंदना से किया है । पहले श्लोक में ही वह अपने गुरु दादू दयाल की वंदना करते हैं । एक ही अंतःकरण के भीतर विभिन्न प्रकार की अग्नियाँ होती है । जैसे क्रोधाग्नि, कामाग्नि आदि । सद्गुरु का अंतकरण इन सभी प्रकार की अग्नियों से परे होता है । उनका चित्त शांत होता है । उनके मार्गदर्शन में साधना करने से सभी प्रकार की अग्नि शांत हो जाती है । संतों ने गुरु को भृंगी के समान कहा है । कबीर भी गुरु को भृंगी कहते हैं । भृंगी अपने अंडे के ऊपर गा-गाकर उसे भृंग बना देता है । फिर वह भी भृंगी बनकर गाने लगता है । इस तरह गुरु सामान्य से सामान्य मनुष्य को भी अपने आचरण और उपदेश से संत बना देता है । हमारा मन अनेक विकारों से भरा होता है । इनका निष्कासन होना स्वस्थ जीवन के लिए आवश्यक है । मन की शुद्धि से ही विवेक की जागृति संभव है । जिस तरह साँप का जहर उतारने के लिए गारुड़ी की आवश्यकता होती है, उसी तरह शरीर का जहर निकालने के लिए गुरु आवश्यक है । इसलिए संत दादू दयाल कहते हैं -

''मन भुवंग बहु विष भर्या, निर्बीष क्यूंहि न हुई ।
दादू मिल्या गुरु गारुड़ी निर्बीष किया सोई ।।''

मीरा को भक्ति का मार्ग उनके गुरु ने दिखाया था । इसीलिए वह अपने गुरु को कभी विस्मृत नहीं करती।

''पायो जी मैंने राम रतन धन पायो ।
वस्तु अनमोलक दी म्हारे सतगुरु किरपा करि अपनायो ।।''

इस तरह भक्ति साहित्य में गुरु परंपरा का प्रचलन दिखाई देता है ।

भक्ति परंपरा के प्रमुख संत कवि और उनकी गुरु-शिष्य परंपरा

भारतीय साहित्य के भक्ति परंपरा में गुरु-शिष्य परंपरा की एक महत्वपूर्ण शृंखला रही है । जिसमें अनेक प्रसिद्ध संत कवियों ने अपने गुरुओं से ज्ञान तथा मार्गदर्शन प्राप्त किया और फिर उसे अपनी रचनाओं में प्रस्तुत कर उसे आगे की पीढ़ी को संप्रेषित किया । इस परंपरा में गुरु का स्थान सर्वोच्च स्वीकार किया गया है । शिष्यों में भी अपने गुरु के प्रति सम्मान, समर्पण और श्रद्धा की भावना दिखाई देती है । भक्तिकाल भारतीय संस्कृति और साहित्य का एक स्वर्णिम युग माना जाता है । इस काल में कईं ऐसे महान संत कवि हुए जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज को नई दिशा प्रदान कर सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त किया। उनकी गुरु परंपरा ने ज्ञान और भक्ति के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है । इस गुरु परंपरा का परिचय निम्नांकित है ।

राघवानंद और रामानंद

रामानंद राघवानंद के शिष्य थें । दक्षिण भारत की भक्ति की लहर उत्तर भारत में प्रवाहित करने में रामानंद जी का योगदान बहुत ही महत्वपूर्ण है । रामानंद एक प्रसिद्ध वैष्णव संत थें । भक्ति आंदोलन को पुनर्जीवित करने में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण रही है । उन्होंने जाति भेद का विरोध करते हुए सभी के लिए भक्ति का संदेश फैलाया। राघवानंद से गुरु दीक्षा लेने के बाद रामानंद ने 'रामावत संप्रदाय' को आगे बढ़ाया । कहा जाता है कि श्री संप्रदाय से निकटता के कारण दोनों के बीच का भेद लगभग समाप्त हो गया। इनका मूल मंत्र 'राम' या 'सीता राम' तथा इष्टदेव 'श्री राम' हैं । इनके राम निराकार और निर्विकार होते हुए भी भक्तों के कल्याण के लिए अवतार लेते हैं। इनके बारह शिष्यों को 'महाभागवत' भी कहते हैं । इनके शिष्यों में निर्गुणवादी और सगुणवादी दोनों प्रकार के शिष्य रहे हैं ।

रामानंद और कबीर

निर्गुणवादी ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि संत कबीर ने रामानंद को अपना गुरु माना था । अत: कबीर रामानंद के शिष्य थें । रामानंद ने कबीर को भक्ति और ज्ञान का मार्ग दिखाया । भक्ति परंपरा में अपना महत्वपूर्ण योगदान देनेवाले कबीर ने अपनी रचनाओं में गुरु की महिमा का गुणगान किया है । गुरु की महानता तथा उसके विलक्षण गुणों का बखान करते हुए कबीर कहते हैं

''सब धरती कागज करूँ, लिखनी सब बनराय।
सात समुद्र की मसि करूँ, गुरु गुण लिखा न जाय ।।''

अर्थात पूरी धरती को कागज, सभी जंगलों की लकड़ी से कलम और सातों समुद्रों को स्याही बनाकर लिखने पर भी गुरु के गुण नहीं लिखे जा सकते ।

वृद्धानंद और दादू दयाल

दादू दयाल भक्तिकाल के ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रमुख संत कवि और समाज सुधारक के रूप में प्रसिद्ध हैं । उन्होंने दादूपंथ की स्थापना की । राजस्थान में भक्ति आंदोलन के निर्माण में इस पंथ ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । दादू दयाल ने भी कबीर की भाँति जाति व्यवस्था और धार्मिक कर्मकांडों का विरोध किया । मानव जाति के लिए समानता और प्रेम का संदेश दिया । वृद्धानंद दादू दयाल के गुरु माने जाते हैं । इसके अतिरिक्त कुछ दादू पंथी परंपराओं में कबीर जी को भी दादू दयाल का गुरु स्वीकार किया गया है। कबीर से उन्होंने

आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति की । गुरु महिमा का गान करते हुए वे कहते हैं,

''दादू सतगुरु सौं सहजै मिल्या, लीया कंठ लगाइ ।
दया भई दयाल की, तब दीपक दीया जगाइ ।।''

अर्थात् मेरे सतगुरु मुझे सहज भाव से मिले और उन्होंने मुझे अपने गले से लगा लिया। उनकी दया से मेरे ह्रदय में ज्ञान रूपी दीपक प्रज्वलित हो गया और उस प्रकाश से मेरा अज्ञान रूपी अंधकार दूर हो गया।

रामानंद और रविदास

भक्ति परंपरा के संत कवियों में संत कवि रविदास भी उल्लेखनीय हैं । रामानंद की संत परंपरा में वे दीक्षित हुए थें । अंत: वे रामानंद के शिष्य थें । चमार जाति में जन्म लिए रविदास ने जाति भेद का विरोध करते हुए आत्मज्ञान पर बल दिया । आम जनता को उन्होंने धार्मिक अंध:विश्वास और आडंबरों से दूर रहने की सलाह दी । उनका मानना था की अगर मन पवित्र हो तो गंगा स्नान करने की भी आवश्यकता नहीं है । उनके पदों को सिख लोगों के पवित्र ग्रंथ 'गुरु-ग्रंथ साहिब' में भी शामिल किया गया है । संत रविदास ने गुरु महिमा और सत्संग का जोरदार समर्थन किया है । उन्होंने गुरु महिमा को अपने दोहों और वचनों में प्रस्तुत किया है । अन्य भक्त कवियों की ही तरह रविदास जी का भी मानना है की गुरु ही अज्ञान रूपी अंधकार को दूर कर ज्ञान का प्रकाश दिखाते हैं । गुरु ही मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करते हैं । रविदास जी के शब्दों में -

''गुरु ग्यांन दीपक दीया, बाती दइ जलाय ।
रैदास हरि भगति कारनै, जनम मरन विलमाय ।।''

रविदास कहते हैं कि सद्गुरु ने मुझे भक्ति रूपी बाती से युक्त ज्ञान का दीपक दिया । जिससे मुझे ईश्वर की भक्ति का सही मार्ग प्राप्त हुआ और हरि की भक्ति के कारण ही मैं जन्म और मृत्यु के बंधन से मुक्त हो गया।

नरहरीदास और तुलसीदास

गोस्वामी तुलसीदास 16 वीं सदी के महान राम भक्त कवि थें । वे नरहरीदास के शिष्य थें । नरहरीदास ने उन्हें 'रामचरितमानस' की रचना के लिए प्रेरित किया । तुलसीदास जी ने भी अपनी रचनाओं में गुरु शिष्य परंपरा को महत्वपूर्ण स्थान दिया है । उनके अनुसार गुरु के शरण में जानेवाला व्यक्ति संसार के सभी दु:खों से मुक्त हो जाता है । एक गुरु ही अज्ञान रूपी अंधकार को नष्ट कर ज्ञान रूपी प्रकाश का निर्माण करता है । गुरु महिमा का गान करते हुए तुलसीदास ने लिखा है

''बंदउ गुरु पद कंज कृपा सिंधु नर रूप हरि।
महामोह तम पुंज जासु बचन रवि कर निकर।''

अर्थात् गुरु कृपा के सागर हैं । वे मनुष्य के रूप में भगवान के समान है । गुरु के वचन सूर्य के किरणों के समान हैं, जिनके कारण शिष्य के जीवन का अज्ञान रूपी अंधकार दूर हो जाता है ।

वल्लभाचार्य और सूरदास

सूरदास 16 वीं सदी के कृष्ण भक्ति शाखा के एक महान और प्रमुख कवि थें । वल्लभाचार्य उनके गुरु थें, जिन्होंने उन्हें कृष्ण भक्ति का मार्ग दिखाया । कहा जाता है कि सूरदास और वल्लभाचार्य की मुलाकात आगरा और मथुरा के बीच गऊघाट पर हुई थी । वल्लभाचार्य ने सूरदास को पुष्टिमार्ग की दीक्षा देकर उन्हें कृष्ण लीला

के पद गाने का उपदेश किया । सूरदास ने वल्लभाचार्य के मार्गदर्शन में कृष्ण के बाल रूप का बहुत ही सुंदर वर्णन अपनी रचना 'सूर-सागर' में किया है । सूरदास ने गुरु और अपने आराध्य श्री कृष्ण को एक ही माना है । उन्होंने गुरु के प्रति अपनी अटूट श्रद्धा प्रकट करते हुए गुरु के चरणों को ही अपने जीवन का आधार माना है । उनका यह भी कहना था की गुरु के बिना जीवन में ज्ञान का प्रकाश नहीं आ सकता । गुरु की कृपा और उनके ज्ञान की महिमा का वर्णन करते हुए सूरदास ने लिखा है ।

''गुरु बिनु ऐसी कौन करै ?
माला-तिलक मनोहर बाना, लै सिर छत्र धरै ।
भवसागर तैं बूड़त राखै, दीपक हाथ धरै ।
सूर स्याम गुरु ऐसौ समरथ, छिन मैं ले उधरै ।।''

रविदास और मीराबाई

मीराबाई 16 वीं सदी की एक महान कृष्ण भक्त कवयित्री थी । वह रविदास की शिष्या थीं । रविदास ने उन्हें कृष्ण भक्ति का मार्ग दिखाया । बचपन में ही कृष्ण भक्ति के भाव उनके मन में जागृत हुए थें । विवाह के बाद कृष्ण भक्ति की यह भावना और भी अधिक तीव्र हुई । जिसके कारण वह भक्ति में अधिक तल्लीन रहने लगी । जिसके कारण उन्हें ससुराल में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा । फिर भी मीराबाई ने श्री कृष्ण को ही अपना पति मानकर अपना जीवन उनकी भक्ति में समर्पित कर दिया । मीराबाई ने भी अपनी रचनाओं में गुरु- शिष्य परंपरा को महत्वपूर्ण स्थान दिया है । मीरा को भक्ति का मार्ग उनके गुरु ने दिखाया था । इसीलिए वह अपने गुरु को कभी भी भूलती नहीं । गुरु कृपा की महिमा का गान करते हुए मीराबाई ने कहा है -

''पायो जी मैंने राम रतन धन पायो ।
वस्तु अनमोलक दी म्हारे सतगुरु किरपा करि अपनायो ।।''

इस तरह भक्ति परंपरा में प्रमुख संत कवि और उनकी गुरु-शिष्य परंपरा का प्रचलन दिखाई देता है । भक्ति परंपरा के इन कवियों के अतिरिक्त संत गुरु नानक, संत सुंदरदास, संत कुंभनदास, नंददास आदि संत कवियों का भी इस परंपरा में महत्वपूर्ण योगदान रहा है ।

भारतीय साहित्य में गुरु परंपरा का महत्व :-

भारतीय साहित्य में गुरु-शिष्य परंपरा का बहुत ही महत्व रहा है । भारतीय साहित्य के निर्माण और उसकी समृद्धि की दृष्टि से भी गुरु परंपरा ने अपना उल्लेखनीय योगदान दिया है । प्रारंभ से ही इस परंपरा ने ज्ञान और संस्कृति के रक्षा और उसके प्रचार-प्रसार में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है । गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से ही ज्ञान, कला, और आध्यात्मिक आदि अनेक विद्याओं को तथा अन्य क्षेत्रों के ज्ञान को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक संप्रेषित किया जाता रहा है । गुरु-शिष्य परंपरा के कारण ही आने वाली प्रत्येक नई पीढ़ी तक पहली पीढ़ी द्वारा जो ज्ञान अर्जित किया है वह ज्ञान पहुँचता रहता है । इस गुरु परंपरा के प्रत्येक गुरु ने अपने समय की पीढ़ी के लिए शाश्वत ज्ञान को तत्कालीन परिवेश के अनुसार प्रासंगिक बना कर प्रस्तुत किया है । आज हम देखते है की मनुष्य ने विभिन्न क्षेत्रों में जो प्रगति की है, उसके पीछे इस परंपरा का बहुत बड़ा योगदान रहा है । प्रत्येक गुरु ने अपने समय में इस परंपरा में अपना बड़ा योगदान दिया है । बड़े बड़े महान ग्रंथों का निर्माण इसी परंपरा के कारण हुआ है । प्रत्येक परंपरा में गुरुओं का व्यक्तित्व बहुत ही प्रभावशाली और विलक्षण गुणों से युक्त रहा।

उस व्यक्तित्व ने उस समय के और बाद के परिवेश को पूरी तरह से प्रभावित किया हुआ दिखाई देता है । उन व्यक्तित्वों के स्मरण मात्र से ही उनके सारे गुण हमारे सामने चाहे कुछ समय के लिए भी क्यों न हो, जीवंत हो उठते हैं । भारतीय साहित्य आज भी अपने पूर्ववर्ती इस परंपरा के विलक्षण व्यक्तित्वों से प्रभावित दिखाई देता है । इसी से इस परंपरा के महत्व को समझा जा सकता है । गुरु शिष्य परंपरा देश की संस्कृति का एक अहम हिस्सा है । अत: इस परंपरा को बनाए रखना हम सभी का कर्तव्य है । गुरु शिष्य परंपरा के महत्व को निम्नांकित मुद्दों के आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है ।

1) **ज्ञान का हस्तांतरण एवं रक्षा :–** गुरु शिष्य परंपरा में गुरु अपने अर्जित ज्ञान कौशल और अनुभव को शिष्य को हस्तांतरित करते हैं । जिससे शिष्य तो ज्ञानी बनते ही हैं, साथ ही ज्ञान की रक्षा भी होती है । यह ज्ञान पुस्तकों या औपचारिक शिक्षा से मिलने वाले ज्ञान की तरह सीमित नहीं होता, बल्कि इसमें जीवन के अनुभव, नैतिक मूल्यों और आध्यात्मिक ज्ञान का भी समावेश होता है । जिसे गुरु अपने शिष्यों को प्रदान करते हैं । ज्ञान प्राप्त शिष्य जब गुरु की भूमिका में आते हैं तो वे प्राप्त ज्ञान का अपने शिष्यों में हस्तांतरण करते हैं । इस तरह ज्ञान के हस्तांतरण की यह प्रक्रिया निरंतर जारी रहती है और ज्ञान की भी रक्षा होती है । भारतीय गुरु परंपरा इसका एक अच्छा उदाहरण है ।

2) **सांस्कृतिक और पारंपरिक मूल्यों की रक्षा :–** गुरु शिष्य परंपरा में ज्ञान की तरह सांस्कृतिक और पारंपरिक मूल्यों की भी रक्षा की जाती रही है । इस परंपरा में हमारे सांस्कृतिक और पारंपरिक मूल्य अगली पीढ़ी तक पहुँचाएँ जाते हैं । गुरु अपने शिष्यों को अपनी संस्कृति, परंपराओं और रीति रिवाज संबंधी ज्ञान प्रदान करते हैं । जिससे सांस्कृतिक और पारंपरिक मूल्यों के संरक्षण में मदद मिलती है ।

3) **नैतिक और आध्यात्मिक विकास :–** भारतीय समाज के नैतिक और आध्यात्मिक विकास में गुरु-शिष्य परंपरा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है । सामाजिक स्वास्थ्य के लिए नैतिक मूल्यों का होना आवश्यक होता है । गुरु-शिष्य परंपरा में शिष्य के नैतिक और आध्यात्मिक विकास की ओर विशेष ध्यान दिया गया दिखाई देता है । गुरु अपने शिष्य को सही और गलत के बीच अंतर परखना सिखाते हैं और उसके विवेक को जागृत करते हैं । साथ ही उन्हें एक बेहतर इंसान बनने की दृष्टि से मार्गदर्शन करते हैं ।

4) **व्यक्तित्व का विकास :–** गुरु-शिष्य परंपरा में शिष्य के व्यक्तित्व के समग्र विकास की ओर विशेष ध्यान दिया दिखाई देता है । अंत: गुरु शिष्य को केवल ज्ञान नहीं देते बल्कि उनके समग्र व्यक्तित्व को विकसित करने की दृष्टि से मार्गदर्शन करते हैं । गुरु शिष्य को उनकी क्षमताओं की पहचान कराते हैं और उनके व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास की दृष्टि से शिक्षा प्रदान करते हैं ।

5) **सामाजिक सद्भाव :–** गुरु-शिष्य परंपरा ने समाज में सद्भाव और एकता बनाए रखने हेतु बहुत बड़ा सहयोग दिया है । गुरु शिष्य को एक दूसरे के साथ सहयोग करने और एक दूसरे का सम्मान करने की शिक्षा प्रदान करते हैं । जिससे आपसी सद्भाव और भाईचारा बढ़ने में मदद होती रही है ।

6) **धार्मिक ग्रंथों में गुरु शिष्य परंपरा का महत्व :–** वेदों और उपनिषदों में गुरु को ब्रह्मा विष्णु और महेश के रूप में स्वीकारा गया है । गुरु को ज्ञान का स्रोत माना जाता है और शिष्य को गुरु के प्रति समर्पण और श्रद्धा रखने की सलाह दी जाती है । रामायण और महाभारत में गुरु-शिष्य संबंधों के अनेक उदाहरण मिलते हैं । वशिष्ठ, विश्वामित्र, द्रोणाचार्य जैसे गुरुओं ने अपने शिष्यों को न केवल युद्ध कौशल सिखाया बल्कि उन्हें नैतिक और आध्यात्मिक ज्ञान भी प्रदान किया । इसी तरह अन्य धार्मिक ग्रंथों में भी जैसे की भागवत गीता में कृष्ण ने अर्जुन को गुरु के रूप में ज्ञान प्रदान कर मार्गदर्शन किया ।

तात्पर्य भारतीय साहित्य में गुरु-शिष्य परंपरा के महत्व को दर्शाने वाले कई उदाहरण मिलते हैं । इस तरह गुरु-शिष्य परंपरा भारतीय संस्कृति और साहित्य का एक अभिन्न अंग है । यह परंपरा ज्ञान नैतिकता और आध्यात्मिक विकास का एक महत्वपूर्ण स्रोत भी रही है । आज भी इसका महत्व बना हुआ है । जिसके कारण वह आज भी प्रासंगिक है ।

भारतीय ज्ञान परंपरा में भी गुरु-शिष्य परंपरा का महत्वपूर्ण स्थान रहा है । गुरुकुल परंपरा में शिष्य गुरु के आज्ञा के अनुसार ज्ञान प्राप्ति के विभिन्न सोपानों का अनुसरण किया करते थें । साथ ही जीवन के अलग-अलग क्षेत्र में अनुशासन का पालन करते हुए अपना जीवन यापन करते थें । इस परंपरा में विद्या का बहुत सम्मान तथा आदर होता था । ज्ञान को एक अमूल्य निधि के रूप में देखा जाता था । इसी ज्ञान को गुरु द्वारा शिष्य को प्रदान किया जाता था । गुरु के महत्व को रेखांकित करते हुए कबीर ने कहा है -

''गुरु गोविंद दोहु खडे, काके लागु पाई,
बलिहारी गुरु आपनौ, जिन गोविंद दियो बताई ।।''

मध्यकालीन समाज पूरी तरह से अज्ञान से घिरा हुआ था । सच और झूठ में अंतर करना मुश्किल हो गया था । इन हालातों में एकमात्र गुरु ही थें, जो अच्छे और बुरे के अंतर का ज्ञान दे सकते थें । इसलिए भक्ति कालीन काव्य में गुरु के बिना किसी भी प्रकार के ज्ञान की कल्पना करना असंभव था । सभी भक्त कवियों ने गुरु के महत्व का स्वीकार करते हुए उनके ज्ञान और मार्गदर्शन की आवश्यकता अधोरेखित की है । घट-घट में समाए हुए अपने गुरु के बारे में दादू दयाल कहते हैं -

''घट घट राम ही रतन है, दादू लखे न कोई,
सद्गुरु सबदों पाइये, सहजे ही गम होई ।।''

संत मलूक दास ने गुरु और ब्रह्मा को एक समान ही माना है । उनकी दृष्टि से दोनों में कोई अंतर नहीं है । उनके गुरु सर्वशक्तिमान हैं । गुरु ईश्वर की तरह हमारे सभी कार्यों को सफल बनाने में सक्षम है । गुरु इतने सामर्थ्यशाली है कि, वे सुई की छेद में से भी सुमेरु पर्वत को आर-पार ले जा सकते हैं ।

''हमारा सद्गुरु बिरले जानै,
सुई के नाके सुमेर चलावै, सो यह रुप बखानै ।।''

आचार्य चाणक्य ने भी हमें हमेशा गुरु का सम्मान करने की सलाह दी है । जिस तरह पिता कभी भी अपने बच्चों का अहित नहीं सोच सकते हैं, ठीक उसी तरह गुरु भी अपने शिष्य के लिए कभी गलत नहीं सोच सकते । आचार्य चाणक्य ने भी गुरु के महत्व को बताया है। आचार्य चाणक्य के अनुसार व्यक्ति का भविष्य गुरु ही संवार सकते हैं । गुरु हमेशा अपने शिष्यों को सही मार्ग दिखाते हैं । गुरु के बताए मार्ग पर चलने वाला व्यक्ति जीवन में कभी भी असफल नहीं हो सकता है, क्योंकि सही और गलत की पहचान भी गुरु के माध्यम से ही होती है । भारत में गुरु परंपरा हजारों वर्षों से चली आ रही है । हिंदू धर्म में वेद व्यास जी को प्रथम गुरु माना गया है। इसी कारण वेद व्यास जी के जन्मोत्सव को ही गुरु पूर्णिमा के रूप में मनाया जाता है । आषाढ़ माह की पूर्णिमा के दिन ही वेद व्यास जी का जन्म हुआ था।

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि हमारी प्राचीन भारतीय परंपरा में गुरु को ईश्वर से भी ऊँचा स्थान दिया गया दिखाई देता है । सभी धर्मों ने 'गुरु-शिष्य' की परंपरा और उसके महत्व को स्वीकार करके उसे प्रस्तुत किया हुआ हम देख सकते हैं । आदिकाल से भारत में ज्ञान और शिक्षा ऋषि-मुनियों और संतों द्वारा दी गई है। देश की संस्कृति का अहम हिस्सा होने के कारण आज भी इस परंपरा को बनाए रखने के प्रयत्न दिखाई देते हैं ।

1.3.2 हिंदी साहित्य में भक्ति परंपरा

हिंदी साहित्य के इतिहास में 14 वीं शती से 17 वीं शती तक एक बहुत ही महत्वपूर्ण साहित्यिक आंदोलन चला, जिसे 'भक्ति आंदोलन' नाम से जाना जाता है । यह आंदोलन केवल धार्मिक नहीं था बल्कि इसने तत्कालीन सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन में अपना उल्लेखनीय योगदान दिया । यह आंदोलन एक दृष्टि से मध्यकालीन भारत में आध्यात्मिक और सामाजिक सुधार का आंदोलन था । इसमें भक्ति के क्षेत्र में कर्मकांड की अपेक्षा ईश्वर के प्रति व्यक्तिगत भक्ति पर अधिक बल दिया था । जाति भेद का विरोध करना, समानता को बढ़ावा देना और आध्यात्मिकता को सभी के लिए सहज-सुलभ बनाकर धार्मिक मान्यताओं और परंपराओं को नया रूप देने की दृष्टि से इस आंदोलन से प्रचलित भक्ति परंपरा का अपना एक अलग महत्व है । इसी भक्ति परंपरा से प्रभावित इस कालखंड को 'भक्तिकाल' कहा गया । हिंदी साहित्य के इतिहास में इस भक्ति काल का अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है । आदिकाल के पश्चात आए इस काल को 'पूर्व मध्यकाल' भी कहा जाता है । इसका कालखंड विक्रमी संवत 1375 से विक्रमी संवत 1700 तक माना जाता है । हिंदी साहित्य के इस श्रेष्ठ युग का विद्वानों द्वारा अलग-अलग नामकरण किया गया है । जॉर्ज ग्रियर्सन ने इसे 'स्वर्ण काल' कहा, श्यामसुंदर दास जी इसे 'स्वर्ण युग' कहते हैं, आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी ने इसे 'भक्तिकाल' की संज्ञा दी, तो हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने भक्ति काल को 'लोक जागरण काल' कहा । हिंदी साहित्य के श्रेष्ठ कवियों द्वारा साहित्यिक दृष्टि से सर्वोत्तम रचनाओं का सृजन इसी भक्ति काल में हुआ ।

हिंदी साहित्य में भक्ति परंपरा का सूत्रपात भक्ति आंदोलन से ही माना जाता है । इस भक्ति आंदोलन का प्रारंभ दक्षिण भारत में हुआ । शंकराचार्य, रामानुज और माधवाचार्य जैसे कईं संतों ने इसका प्रचार-प्रसार कर उसे लोकप्रिय बनाया और धीरे-धीरे पूरे भारत में भक्ति की यह परंपरा फैल गई । दक्षिण भारत में अलवार बंधु नाम से कईं भक्त हुए । वे बहुत पढ़े लिखे नहीं थे, परंतु अनुभवी थें । अलवारों के बाद दक्षिण में आचार्य की एक परंपरा प्रचलित हुई, जिसमें रामानुजाचार्य का नाम उल्लेखनीय है । रामानुजाचार्य की परंपरा में ही रामानंद हुए । वे उस समय के सबसे बड़े आचार्य माने जाते हैं । उन्होंने भक्ति के क्षेत्र में ऊँच-नीच के भेद का विरोध करते हुए, सभी जातियों के व्यक्तियों को अपना शिष्य बनाया । रामानंद ने विष्णु के अवतार राम की उपासना पर बल दिया । रामानंद और उनके शिष्यों ने दक्षिण की यह भक्ति की लहर उत्तर भारत में प्रवाहित करने में उल्लेखनीय योगदान दिया । इसी भक्ति परंपरा में भक्ति की दो धाराएँ-निर्गुण और सगुण प्रवाहित हुई, जिससे अनेक संत एवं भक्त कवियों का आविर्भाव हुआ । निर्गुणवादी कबीर ने धार्मिक कर्मकांड तथा बाह्याडंबर का विरोध करते हुए निर्गुण-निराकार ईश्वर की भक्ति की बात रखी । संत नामदेव जी ने अपने पद तथा भजनों के माध्यम से भक्ति का संदेश दिया । वल्लभाचार्य ने पुष्टिमार्ग की स्थापना कर विष्णु के कृष्ण अवतार की उपासना करने का प्रचार-प्रसार किया । उनके द्वारा कृष्ण की जिस लीला गान का उपदेश किया गया, उससे पूरा देश प्रभावित हुआ । अष्टछाप के सुप्रसिद्ध कवियों ने उनके उद्देश्यों को अपनी सुमधुर कविता के माध्यम से जनमानस तक पहुँचाया । कृष्ण भक्त सूरदास और मीराबाई ने अपने पदों के माध्यम से सगुण-साकार कृष्ण की भक्ति को प्रस्तुत किया । वैष्णववाद के राम भक्ति पंथ के सबसे प्रसिद्ध और चर्चित संत कवि तुलसीदास ने अपने साहित्य के द्वारा श्रीराम की भक्ति को अभिव्यक्त किया । इस तरह हिंदी साहित्य की इस भक्ति परंपरा में अनेक भक्त एवं संत कवियों ने अपनी रचनाओं से हिंदी साहित्य के भक्ति काल को समृद्ध किया ।

भक्ति परंपरा की मुख्यत: दो धाराएँ :-

1) निर्गुण भक्ति :- निर्गुण भक्ति धारा के अंतर्गत निर्गुण-निराकार ईश्वर की आराधना पर बल दिया गया है । इस धारा के कवियों ने ईश्वर के अवतार वाद तथा बहु-देववाद का विरोध करते हुए एकेश्वरवाद का समर्थन किया है । इस धारा के कवि ईश्वर को किसी विशेष रूप या नाम में नहीं बाँधते, बल्कि उन्हें निराकार, अनंत और अद्वैत रूप में स्वीकार करते हैं । निर्गुण भक्ति के अंतर्गत भी दो शाखाएँ मिलती है ।

1) ज्ञानाश्रयी शाखा :- यह निर्गुण भक्ति काव्य धारा की तथा भक्तिकाल की एक महत्वपूर्ण शाखा है । इस शाखा के कवियों द्वारा निराकार, निर्गुण ईश्वर की उपासना पर बल दिया गया दिखाई देता है । ईश्वर के निर्गुण निराकार रूप पर इनका विश्वास है । इस शाखा के कवि ज्ञान और भक्ति के माध्यम से ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग बताते हैं । इन्होंने गुरु को ज्ञान का मार्गदर्शक मानते हुए अपनी रचनाओं में गुरु महिमा का गुणगान किया है । इस शाखा के संत कवियों ने जाति भेद का विरोध करते हुए सभी मनुष्यों को समान माना है । सांसारिक सुखों का त्याग कर साधुओं सा जीवन जीते हुए इन कवियों ने अपने सामान्य जीवन दर्शन से जनता का प्रबोधन करने का काम किया । इन कवियों ने ज्ञान और भक्ति के माध्यम से समाज को जागृत कर सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ आवाज उठाई । कबीर जैसे कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज में प्रेम और समानता का संदेश दिया । अपनी बात अधिक से अधिक सामान्य जनता के समझ में आए, इसलिए इस शाखा के कवियों ने अपनी रचनाओं में लोकभाषा का प्रयोग किया है । संत कबीर इस शाखा के प्रमुख कवि माने जाते हैं । कबीर ने भक्ति के बिना अन्य सारी साधनाओं को व्यर्थ और निरर्थक माना है । उन्होंने प्रेम और भक्ति को स्वस्थ समाज के लिए आवश्यक मानकर अपने समय के सारे मिथ्याचार, कर्मकांड, अमानवीयता और हिंसा का विरोध किया । कबीर शास्त्र की अपेक्षा अपने अनुभव और बुद्धि को प्रमाण मानते थें । इस शाखा के अन्य कवियों में दादू दयाल, गुरुनानक, रैदास, सुंदरदास, आदि के नाम उल्लेखनीय हैं ।

2) प्रेमाश्रयी शाखा :- निर्गुण भक्ति काव्य धारा की यह भी एक महत्वपूर्ण काव्यधारा है । इसे प्रेममार्गी शाखा या सूफी शाखा भी कहा गया है । इस शाखा के कवियों ने प्रेम के माध्यम से ईश्वर तक पहुँचने के मार्ग को अपनी रचनाओं द्वारा प्रस्तुत किया है । इस शाखा के अंतर्गत प्रेम कहानियों के माध्यम से आध्यात्मिक प्रेम का चित्रण किया गया है । इस शाखा के कवियों ने प्रेम को ईश्वर प्राप्ति का मार्ग माना है । इसीलिए इन कवियों ने धार्मिक खंडन-मंडन में न पड़कर प्रेम पर ध्यान केंद्रित किया । यह काव्य धारा सूफी मत से प्रभावित है । इन कवियों ने जाति भेद एवं संप्रदाय की दीवारों तोड़कर मनुष्यता का एक नया दर्शन प्रस्तुत किया । इन सूफी संतों का आम जनता ने भी मुक्त हृदय से स्वागत किया । इन संत कवियों ने धार्मिक विद्वेष के बदले धार्मिक सहिष्णुता एवं मानवतावाद का प्रचार कर व्यापक जनता की इच्छाओं को पूर्ण किया । इस काव्य परंपरा के कवियों के संपूर्ण चित्रण के केंद्र में प्रेम है । उनकी प्रेम भावना श्रृंगारिकता का स्पर्श करती हुई भी उसे लौकिक से अलौकिक बना देती है । उनकी प्रेम भावना संघर्ष एवं साहस से युक्त है । सूफी प्रेम साधना में तपस्या एवं कष्ट को प्रेम का प्रमुख सोपान माना गया है । मलिक मुहम्मद जायसी इस शाखा के प्रमुख कवि माने जाते हैं । 'पद्मावत' उनकी एक प्रसिद्ध रचना है । साधनात्मक और भावनात्मक रहस्यवाद जायसी की एक बहुत बड़ी देन है । उन्होंने इस योग मूलक साधनात्मक रहस्य को अत्यंत सरस और मधुर बनाया । रहस्यवाद का इतना सुंदर रमणीय चित्रण अन्य कवियों की रचना में दुर्लभ है । सूफी साधना में आध्यात्मिक विरह का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है, जिसका जायसी ने बहुत ही सुंदर चित्रण अपनी रचनाओं में किया है ।

2) सगुण भक्ति :- सगुण भक्ति धारा के अंतर्गत भगवान के सगुण साकार रूप को स्वीकार किया गया है । सगुण भक्त कवियोंने ने ईश्वर के साकार रूप को स्वीकार कर उसकी आराधना की है । जैसे राम और कृष्ण को विष्णु का अवतार मानकर कवियोंने रचनाओं में अपनी भक्ति भावना को प्रस्तुत किया है । सगुण भक्ति के अंतर्गत भी दो शाखाएँ मिलती है ।

1) राम भक्ति शाखा – राम भक्ति शाखा के कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से राम के लोक रक्षक रूप को जनता के सामने प्रस्तुत किया । इन कवियों की रचनाएँ ब्रज और अवधि इन दोनों भाषाओं में लिखी गई है । इन कवियों ने अपने काव्य में राम के संपूर्ण जीवन के सभी पक्षों का विस्तार से चित्रण किया है । इस शाखा के कवियों ने राम के प्रति अपनी भक्ति को विभिन्न काव्यात्मक रूपों में चित्रित किया है । इस शाखा के प्रमुख कवि गोस्वामी तुलसीदास जी हैं । उनकी प्रसिद्ध रचना 'रामचरितमानस' में राम के संपूर्ण जीवन के माध्यम से व्यक्ति और लोकजीवन के विभिन्न पक्षों को उजागर किया गया है । उसमें भगवान् राम के लोकमंगलकारी रूप का चित्रण है । उनकी 'विनयपत्रिका' में आराध्य के प्रति उनका जो निरंतर और निश्छल समर्पण भाव है, वह काव्यात्मक आत्माभिव्यक्ति का उत्कृष्ट उदाहरण है । काव्याभिव्यक्ति के विभिन्न रूपों पर उनका समान अधिकार है । अपने समय में प्रचलित सभी काव्य शैलियों का उन्होंने अपनी रचनाओं में सफल प्रयोग किया। इन्होंने अपने काव्य में भक्ति के साथ जनता को आचरण, मर्यादा और लोक संग्रह का उपदेश किया । वर्ण व्यवस्था का समर्थन करके अन्य धर्मों द्वारा हिंदू धर्म पर होनेवाले आक्रमण को रोका । हिंदू धर्म के मूल सिद्धांतों को सर्व सुलभ बनाया । शैव तथा वैष्णव के बीच के पारस्परिक मतभेदों को दूर करके उन्हें संगठित किया । इस तरह तुलसीदास जी की अटूट राम भक्ति के कारण तत्कालीन हिंदू समाज की आस्थाओं को बल मिला । तुलसीदास जी के काव्य की सबसे बड़ी विशेषता है, उनकी बहुमुखी समन्वय भावना जो धर्म, समाज और साहित्य इन तीनों क्षेत्रों में दिखाई देती है । इस शाखा के अन्य कवियों में अग्रदास, ईश्वरदास, नाभादास, और केशवदास आदि के नाम उल्लेखनीय हैं ।

2) कृष्ण भक्ति शाखा :- कृष्ण भक्ति शाखा के कवियों का मुख्य विषय था, कृष्ण की लीलाओं का गान करना । वल्लभाचार्य के सिद्धांतों से प्रभावित होकर इस शाखा के कवियों ने अपनी रचनाओं में कृष्ण की बाल लीलाओं का ही अधिक वर्णन किया है । सूरदास इस शाखा के प्रमुख कवि हैं । सूरदास भगवान श्री कृष्ण के प्रति अपनी गहरी भक्ति के लिए प्रसिद्ध हैं । 'सूरसागर' इस रचना में हमें इसके दर्शन होते हैं । इस शाखा के कवियों की रचना में वात्सल्य एवं माधुर्य भाव की प्रधानता है । वात्सल्य भाव के अंतर्गत कृष्ण की बाल लीलाओं, चेष्टाओं तथा माँ यशोदा के हृदय की ममता दिखाई देती है । माधुर्य भाव के अंतर्गत गोपिकाओं की लीलाएँ मुख्य है । सूरदास जी के वात्सल्य वर्णन के बारे में आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी ने लिखा है 'वात्सल्य के क्षेत्र में जितना अधिक उद्घाटन सूर ने अपनी बंद आँखों से किया है उतना किसी और कवि ने नहीं । इस क्षेत्र का वह कोना-कोना झाँक आए थें ।' इस धारा के कवियों ने भगवान कृष्ण की उपासना माधुर्य एवं सख्य भाव से की है । ज्ञान और कर्म के स्थान पर इन कवियों की रचना में भक्ति की प्रधानता मिलती है । इसमें आत्म चिंतन की जगह आत्म समर्पण का भाव अधिक है । कवियों ने अपने आराध्य श्री कृष्ण का लोकरंजन रूप में चित्रण किया है । प्रकृति का अनुपम चित्रण भी इस धारा में मिलता है । ग्राम्य प्रकृति के सुंदर चित्र इनकी रचनाओं में विद्यमान है । कृष्ण भक्ति काव्य की मुक्तक रचनाएँ अधिक पाई जाती है । काव्य रचना अधिकतर पदों में हुई हैं । गीति काव्य की विशेषताओं से यह काव्य युक्त है । कवियों ने ब्रज भाषा में अपनी रचनाओं का सृजन किया है । ब्रजभाषा की कोमलकांत पदावली के प्रयोग से यह काव्य मधुर और सरस बना हुआ है ।

इस तरह भक्ति परंपरा का उदय दक्षिण में आलवार भक्तों द्वारा होकर धीरे-धीरे यह भक्ति परंपरा पूरे भारत में फैल गई । भक्ति के बाह्य और आन्तरिक स्वरूप का निर्धारण करने में चार आचार्यों का जिनमें रामानुज, मध्वाचार्य, निम्बार्क और वल्लभाचार्य जी का उल्लेखनीय योगदान रहा । रामानुजाचार्य के शिष्य रामानंद ने विष्णु के अवतार राम के निर्गुण और सगुण, दोनों ही रूपों को आधार बना कर उत्तर भारत में भक्ति की लहर प्रवाहित की। निर्गुण राम के उपासकों में कबीर, गुरु नानक जैसे भक्त कवि हुए । सगुण राम की लोकमंगलकारी लीलाओं को गोस्वामी तुलसीदास ने प्रस्तुत किया । वल्लभाचार्य ने पुष्टिमार्ग की स्थापना कर विष्णु के कृष्ण अवतार की उपासना करने का प्रचार-प्रसार किया । इस धारा में कृष्ण के वात्सल्य और प्रेम का वर्णन करने वाले सूरदास जैसे अनेक भक्त कवियों ने अपना योगदान दिया । इसके साथ ही इस्लाम की सूफी काव्य-परम्परा और भारत के नाथ पंथियों से प्रभावित हिंदी में सूफी काव्य भी लिखे गए। भारतीय लोक-कथाओं को आधार बनाकर इन कवियों ने अपने प्रबंध काव्यों की रचना की । मुल्ला दाऊद का 'चन्दायन' तथा जायसी का 'पद्मावत' इसी के उदाहरण हैं । हिंदी साहित्य में भक्ति की लगभग चार सौ वर्षों की इस परम्परा में कबीर, गुरु नानक, सूर, तुलसी, जायसी और मीराबाई जैसे महान भक्तों का अविर्भाव हुआ और उन्होंने अपनी सर्वोत्तम रचनाओं के माध्यम से इस भक्ति परंपरा को समृद्ध किया ।

भक्ति परंपरा की प्रमुख विशेषताएँ :-

1) ईश्वर के प्रति उत्कट प्रेम और समर्पण -

भक्ति परंपरा का मूल आधार ईश्वर के प्रति उत्कट प्रेम और अटूट श्रद्धा है । इस परंपरा के कवियों में अपने आराध्य के प्रति पूर्ण समर्पण तथा निष्ठा दिखाई देती है । ईश्वर के प्रति तीव्र प्रेम का अनुभव करना ही भक्ति की पहचान है । सभी भक्त कवियों में हम इस विशेषता को समान रूप से देख सकते हैं । चाहे वे सगुणवादी हो या चाहे निर्गुणवादी । राम की आराधना करनेवाले हो या कृष्ण की । सभी के मन में अपने आराध्य के प्रति गहरी श्रद्धा और उसको पाने की लालसा समान रूप में दिखाई देती है । कबीर के शब्दों में -

''आंखड़िया झाँई पड़ी, पंथ निहारी निहारी ।
जीभढ़िया छाला पड्या, राम पुकारि पुकारि ।।''

जायसी ने भी अपनी रचना 'पद्मावत' में प्रेम तत्व को ही प्रधानता दी है । मीराबाई ने तो खुद को प्रेम की दीवानी कहा है । तुलसीदास जी का पूरा साहित्य ईश्वर के प्रति होनेवाले उत्कट प्रेम को ही उजागर करता है ।

2) समानता का भाव -

भक्ति परंपरा के सभी कवियों ने जाति, लिंग और वर्ग के आधार पर होने वाले भेदभाव का विरोध किया। उनके अनुसार सभी भक्त समान रूप से ईश्वर की भक्ति कर सकते हैं, चाहे वे किसी भी जाति, लिंग या वर्ग के हो । भक्ति के मार्ग में सांसारिक भेदभाव के लिए कोई स्थान नहीं है । इसे हम सभी भक्त कवियों में देख सकते हैं । गोस्वामी तुलसीदास जी ने वर्णाश्रम धर्म का भले ही समर्थन किया हो लेकिन भक्ति के क्षेत्र में वे किसी भी तरह के भेदभाव को स्वीकार नहीं करते । इसीलिए तो उनके राम शबरी के जूठे बेर खा लेते हैं । सूरदास की गोपिकाएँ भी प्रेम के मार्ग में विधि निषेधों को स्वीकार नहीं करती । इसी तरह कबीर आदि निर्गुण कवियों ने भी जाति भेद का विरोध करते हुए कहा है -

''जांति-पांति पूछो नहीं कोई,
हरि को भजे सो हरि का होई ।''

3) गुरु का महत्व एवं गुरु महिमा –

भक्ति परंपरा में गुरु को बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है । ईश्वर के प्रति उत्कट प्रेम की भावना रखने वाले भक्त कवियों ने गुरु को ईश्वर से भी बड़ा स्थान दिया है । उनके अनुसार गुरु ही अपने ज्ञान और मार्गदर्शन से भक्त को ईश्वर तक पहुँचाने में मदद करता है । गुरु के मार्गदर्शन के बिना ईश्वर तक पहुँचना असंभव है । इसीलिए तो कबीर कहते हैं –

''गुरु गोविंद दोहु खडे, काके लागु पाई,
बलिहारी गुरु आपनौ, जिन गोविंद दियो बताई ।''

जायसी के 'पद्मावत' में भी सुआ (हीरामन तोता) गुरु के प्रतीक के रूप में विद्यमान है । तुलसीदास जी ने भी 'रामचरितमानस' के आरंभ में ही गुरु की वंदना की है । तात्पर्य यह की सभी भक्त कवियों ने गुरु के महत्व को स्वीकार किया हैं और अपनी रचनाओं में गुरु महिमा का गुणगान किया है ।

4) शास्त्र ज्ञान का विरोध –

भक्ति परंपरा के कवियों ने शास्त्र ज्ञान और पांडित्य को भक्ति के लिए आवश्यक नहीं माना । बल्कि कभी–कभी तो इसे भक्ति के मार्ग की बाधा के रूप में स्वीकार किया है । इसीलिए तो कबीर ने कहा है –

''पोथी पढ़ी पढ़ी जग मुआ, पंडित भया न कोई ।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होई ।।''

सूरदास की गोपिकाएँ भी उद्धव के शास्त्र ज्ञान का मजाक उड़ाती हुई कहती है –

''आयो घोष बड़ों व्योपारी,
लादी खेप गुण ज्ञान जोग की, ब्रज में आयी उतारी ।।''

तुलसीदास जी ने भी शास्त्रीय ज्ञान की अपेक्षा ईश्वर की कृपा को अधिक महत्वपूर्ण माना है । ईश्वर की कृपा से अज्ञानी और पापी भी सांसारिक दु:खों से मुक्ति पा लेते हैं ।

5) नाम की महिमा –

भक्ति के साधनों में स्मरण, कीर्तन और श्रवण का संबंध नाम महिमा से स्वीकार किया गया है । भक्त कवियों ने राम के नाम को राम से भी बढ़कर माना है । कबीर कहते हैं 'राम नांव ततसार है ।' इसी तरह तुलसीदास ने भी अपनी 'विनयपत्रिका' के कई पदों में उन भक्तों के अनेक उदाहरण दिए हैं, जिन्होंने नाम स्मरण के बल पर अपने आराध्य की कृपा प्राप्त की । 'रामचरितमानस' में भी उन्होंने कलिकाल के कल्याण का सबसे बड़ा साधन राम से भी बढ़कर उनके नाम स्मरण को स्वीकार किया है ।

6) अहंकार का त्याग –

भक्त कवियों में यह विशेषता समान रूप से पाई जाती है । कबीर इसीलिए कहते हैं कि मैं तो राम का कुत्ता हूँ और मोती मेरा नाम है । मेरे गले में राम नाम का पत्ता बँधा है । वह जिधर खींचता है, मैं उधर ही जाता हूँ । सूरदास के विनय संबंधी पदों में भी हमें ऐसा ही समर्पण और दैन्य का भाव दिखाई देता है । तुलसीदास जी ने भी कहा है –

''राम सो बड़ो है कौन, मौसो कौन छोटो?
राम सो खरो है कौन, मौसो कौन खोटो?''

7) सांस्कृतिक एकता –

भक्ति परंपरा ने विभिन्न संस्कृतियों और धर्मों के बीच समन्वय और एकता स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है । कबीर और गुरु नानक जैसे संतों ने धार्मिक सद्भाव और एकता पर जोर दिया। भक्ति परंपरा में सभी धर्मों ने एकता पर जोर दिया हुआ दिखाई देता है । उसने भारत की सांस्कृतिक एकता को और अधिक मजबूत किया। इसके कारण पूरे भारत में एक प्रकार की साधना की लहर जन-मानस में फैल गई ।

8) लोक जीवन से जुड़ाव

भक्त कवि किसी राजा या बादशाह के आश्रय में दरबारी कवि नहीं थे । इनमें से तो कईं भक्त कवि कोई ना कोई व्यवसाय करते थें । कबीर पेशे से जुलाहा थें । रैदास चर्मकार थें । तुलसीदास कथा वाचक थें । इन भक्त कवियों ने राम को ही अपना सब कुछ समझा और सामान्य जनता के बीच अपनी कविता ले गए । यह 'शास्त्र की उपेक्षा' करनेवाला लोकोन्मुख आंदोलन था । इसीलिए यह लोक जीवन में इतना घुल-मिल गया और रस संचित कर सका। अपनी बात अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचे इसलिए इन कवियों ने अपनी रचनाओं में लोकभाषा का प्रयोग किया । इस तरह उनकी कविता में लोग जीवन का समावेश हुआ है ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि भक्त कवियों में कुछ ऐसी विशेषताएँ हैं, जो सभी में समान रूप से विद्यमान है । भक्ति का यह मार्ग ईश्वर की आराधना का सहज, सरल और सुलभ मार्ग था । इस मार्ग में छोटा-बड़ा, ऊँच-नीच का कोई भेद नहीं था । इसमें शास्त्रीय ज्ञान और कठोर साधना की भी आवश्यकता नहीं थी । केवल ईश्वर के प्रति गहरा प्रेम और आत्म समर्पण ही काफी था । इसी कारण इस भक्ति परंपरा को अत्यधिक लोकप्रियता प्राप्त हुई ।

1.3.3 भक्ति परंपरा में गुरु महिमा

भक्ति परंपरा में गुरु का स्थान सर्वोपरि है । भक्ति परंपरा के सभी संत कवियों ने गुरु को भगवान के समान माना है । उनके अनुसार गुरु की महिमा अपरंपार है । गुरु अपने ज्ञान से शिष्य के जीवन के अज्ञान रूपी अंधकार को दूर कर ज्ञान रूपी प्रकाश से भर देते हैं हैं । भक्त कवियों ने संसार रूपी भवसागर को पार करने के लिए गुरु का होना आवश्यक माना है । एक गुरु ही अपने मार्गदर्शन से हमारे जीवन का सही मार्ग प्रशस्त करते हैं । अत: भक्ति परंपरा के सभी संत कवियों ने अपनी रचनाओं में गुरु महिमा का गान किया है । संत कबीर के शब्दों में-

''सद्गुरु की महिमा अनंत, अनंत किया उपकार ।
लोचन अनंत उघारिया, अनंत दिखावण हार ।।''

अर्थात सद्गुरु की महिमा अनंत है । सद्गुरु ने मुझे ज्ञान देकर और मार्गदर्शन कर मुझपर अनंत उपकार किए हैं । गुरु ने ही सांसारिक सुखों में लिपटी मेरी आँखें खोल दी । उससे ज्ञान की ऐसी ज्योति प्रवाहित हो उठी की उसने अनंत ईश्वर के भी दर्शन करा दिए ।

भक्ति परंपरा में गुरु महिमा की कुछ मुख्य विशेषताएँ :-

1) गुरु को ईश्वर के समान मानना – भक्ति परंपरा में संत कवियों ने गुरु को ईश्वर का रूप माना है । उनका मानना है कि गुरु ही ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग दिखाते हैं । अत: गुरु का स्थान ईश्वर के समान ही है । अगर गुरु अपने ज्ञान से सही मार्ग नहीं दिखाते, तो शिष्य अपनी भक्ति में सफल नहीं होता । संत मलूकदास ने गुरु और ब्रह्मा को एक समान ही माना है । उनकी दृष्टि से दोनों में कोई अंतर नहीं है । उनके गुरु सर्वशक्तिमान हैं । गुरु

ईश्वर की तरह हमारे सभी कार्यों को सफल बनाने में सक्षम है । गुरु इतने सामर्थ्यशाली है कि, वे सुई की छेद में से भी सुमेरु पर्वत को आर-पार ले जा सकते हैं ।

''हमारा सद्‌गुरु बिरले जानै,
सुई के नाके सुमेर चलावै, सो यह रुप बखानै ।।''

2) गुरु का ज्ञान – गुरु अपने ज्ञान से शिष्य को ज्ञानी बनाते हैं । अपने ज्ञान से ही शिष्य का मार्गदर्शन करते हैं। गुरु शिष्य के लिए सही मार्ग प्रशस्त कर उसे अज्ञान से ज्ञान की ओर अग्रेसर करते हैं । गुरु के ज्ञान को लेकर रविदास ने कहा है कि सद्‌गुरु ने मुझे भक्ति रूपी बाती से युक्त ज्ञान का दीपक दिया । जिससे मुझे ईश्वर की भक्ति का सही मार्ग प्राप्त हुआ । गुरु महिमा का गान करते हुए तुलसीदास ने लिखा है –

''बंदउ गुरु पद कंज कृपा सिंधु नर रूप हरि।
महामोह तम पुंज जासु बचन रवि कर निकर।''

अर्थात गुरु कृपा के सागर हैं । वे मनुष्य के रूप में भगवान के समान है । गुरु के वचन सूर्य के किरणों के समान हैं, जिनके कारण शिष्य के जीवन का अज्ञान रूपी अंधकार दूर हो जाता है ।

3) गुरु की कृपा – भक्ति परंपरा के सभी संत कवि गुरु की कृपा के लिए लालायित दिखाई देते हैं । उनके अनुसार गुरु की कृपा से शिष्य का जीवन में परिवर्तन आता है और उसे ज्ञान, भक्ति और मोक्ष की प्राप्ति होती है । इन कवियों का विश्वास है कि ईश्वर की कृपा तभी प्राप्त होती है, जब गुरु की कृपा होती है । गुरु की कृपा और उनके ज्ञान की महिमा का वर्णन करते हुए सूरदास ने लिखा है –

''गुरु बिनु ऐसी कौन करै ?
माला-तिलक मनोहर बाना, लै सिर छत्र धरै ।
भवसागर तैं बूड़त राखै, दीपक हाथ धरै ।
सूर स्याम गुरु ऐसौ समरथ, छिन मैं ले उधरै ।।''

4) गुरु का स्थान ईश्वर से भी बढ़कर – भक्ति परंपरा में गुरु को ईश्वर से भी ऊपर का स्थान दिया गया है । इस परंपरा के कवियों का मानना है कि गुरु ईश्वर से भी पहले शिष्य की रक्षा करते हैं । गुरु ही ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग दिखाते हैं । इसीलिए कबीर ईश्वर से पहले गुरु के चरण छूने की बात करते है ।

''गुरु गोविंद दोहु खडे, काके लागु पाई,
बलिहारी गुरु आपनौ, जिन गोविंद दियो बताई ।''

5) गुरु आज्ञा का पालन – संत कवियों ने शिष्य द्वारा गुरु की आज्ञा का पालन करने को अत्यधिक महत्व दिया है । उनके अनुसार गुरु की आज्ञा का पालन करना शिष्य का आद्य कर्तव्य होता है । गुरु कृपा की प्राप्ति के लिए गुरु आज्ञा का पालन करना आवश्यक है । गुरु की आज्ञा का पालन करने से शिष्य को अपने जीवन में सफलता और सुख की प्राप्ति होती है ।

6) गुरु के प्रति समर्पित – भक्ति परंपरा के सभी संत कवियों में अपने गुरु के प्रति समर्पण भाव दिखाई देता है । उनके अनुसार शिष्य अपने गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण का भाव रखना चाहिए । गुरु के प्रति समर्पण से शिष्य को ज्ञान, भक्ति और मोक्ष की प्राप्ति होती है । अत: शिष्य को गुरु के प्रति पूरी तरह से समर्पित होना चाहिए । गुरु के प्रति कबीर का समर्पण निम्नांकित दोहे में देखा जा सकता है । कबीर शीश देकर भी गुरु को प्राप्त कर लेना चाहते हैं ।

''यह तन विष की बेलरी, गुरु अमृत की खान।
सिस दिए जो गुरु मिले, तो भी सस्ता जान ।।''

इस तरह भक्ति परंपरा में गुरु को बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है । ईश्वर के प्रति उत्कट प्रेम की भावना रखने वाले भक्त कवियों ने गुरु को ईश्वर से भी बड़ा माना है । गुरु शिष्य के जीवन में अज्ञान रूपी अंधकार को दूर कर ज्ञान रूपी प्रकाश का निर्माण करते हैं । तात्पर्य गुरु शिष्य को अज्ञान से ज्ञान की ओर ले जाते हैं, जिससे उसे मोक्ष की प्राप्ति होने में मदद होती है ।

भक्ति परंपरा के कुछ प्रमुख कवि और उनकी गुरु महिमा

भक्ति परंपरा के सभी संत कवियों ने अपनी रचनाओं में गुरु महिमा का गान किया है । इस गुरु महिमा में अपने गुरु के प्रति इन कवियों की सम्मान, समर्पण और श्रद्धा की भावना दिखाई देती है । उनमें से कुछ प्रमुख कवियों की गुरु महिमा का विवेचन निम्नांकित है ।

संत कबीर

निर्गुणवादी ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि संत कबीर ने रामानंद को अपना गुरु माना था । अत: कबीर रामानंद के शिष्य थें । रामानंद ने कबीर को भक्ति और ज्ञान का मार्ग दिखाया । भक्ति परंपरा में अपना महत्वपूर्ण योगदान देनेवाले कबीर ने अपनी रचनाओं में गुरु की महिमा का गुणगान किया है । गुरु की महानता तथा उसके विलक्षण गुणों का बखान करते हुए कबीर कहते हैं –

''सब धरती कागज करूँ, लिखनी सब बनराय।
सात समुद्र की मसि करूँ, गुरु गुण लिखा न जाय ।।''

अर्थात् पूरी धरती को कागज, सभी जंगलों की लकड़ी से कलम और सातों समुद्रों को स्याही बनाकर लिखने पर भी गुरु के गुण नहीं लिखे जा सकते । कबीर गुरु को अपने जीवन में सर्वश्रेष्ठ स्थान देते हुए कहते हैं कि गुरु अपने ज्ञान से शिष्य की विकृतियों को दूर करता है। ऐसे गुरु के प्रति समर्पण भाव से युक्त होकर कबीर कहते हैं कि,

''यह तन विष की बेलरी, गुरु अमृत की खान।
सीस दिए जो गुरु मिले, तो भी सस्ता जान।।''

संत दादू दयाल

दादू दयाल भक्तिकाल के ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रमुख संत कवि और समाज सुधारक के रूप में प्रसिद्ध हैं। दादू दयाल ने भी कबीर की भाँति जाति व्यवस्था और धार्मिक कर्मकांडों का विरोध किया । मानव जाति के लिए समानता और प्रेम का संदेश दिया । वृद्धानंद दादू दयाल के गुरु माने जाते हैं । इसके अतिरिक्त कुछ दादू

पंथी परंपराओं में कबीर जी को भी दादू दयाल का गुरु स्वीकार किया गया है। कबीर से उन्होंने आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति की । गुरु महिमा का गान करते हुए वे कहते हैं –

''दादू सतगुरु सौं सहजै मिल्या, लीया कंठ लगाइ ।
दया भई दयाल की, तब दीपक दीया जगाइ ।।''

अर्थात् मेरे सतगुरु मुझे सहज भाव से मिले और उन्होंने मुझे अपने गले से लगा लिया। उनकी दया से मेरे हृदय में ज्ञान रूपी दीपक प्रज्वलित हो गया और उस प्रकाश से मेरा अज्ञान रूपी अंधकार दूर हो गया।

संत नामदेव

संत नामदेव मराठी भाषा के संत कवि है। परंतु हिंदी में भी उन्होंने अपनी भक्ति भावना को पदों के माध्यम से प्रस्तुत किया है । संत नामदेव के गुरु विसोबा खेचर थें । संत नामदेव जी ने अपने गुरु विषयक पदों में गुरु महिमा का वर्णन किया है। उनके अनुसार गुरु शिष्य को ज्ञान, भक्ति और मोक्ष का मार्ग दिखाता है। संत नामदेव जी के मतानुसार गुरु की समानता कोई नहीं कर सकता । इसी बात को उजागर करते हुए वे कहते हैं –

''गुरु सांचे तो सब सांचा, और झूठा सब ठौर।
गुरु के सम न कोऊ है, गुरु गोविंद सिरमौर।।''

संत मलूकदास

संत मलूकदास भी एक प्रसिद्ध भक्त कवि और संत थें । कहा जाता है कि कबीर जी से मिलने के बाद उन्हें आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त हुआ और वे कबीर के शिष्य हुए । उनकी रचनाओं में भी हमें गुरु महिमा के दर्शन होते हैं । संत मलूकदास ने गुरु और ब्रह्म को एक समान ही माना है । उनकी दृष्टि से दोनों में कोई अंतर नहीं है । उनके गुरु सर्वशक्तिमान हैं । गुरु ईश्वर की तरह हमारे सभी कार्यों को सफल बनाने में सक्षम है । गुरु इतने सामर्थ्यशाली है कि, वे सुई की छेद में से भी सुमेरु पर्वत को आर-पार ले जा सकते हैं ।

''हमारा सद्गुरु बिरले जानै,
सुई के नाके सुमेर चलावै, सो यह रुप बखानै ।।''

संत रज्जब

संत रज्जब ने अपने ग्रंथ का आरंभ ही गुरु वंदना से किया है । पहले श्लोक में ही वह अपने गुरु दादू दयाल की वंदना करते हैं । मनुष्य के अंतःकरण के भीतर विभिन्न प्रकार की अग्नियाँ होती है । जैसे क्रोधाग्नि, कामाग्नि आदि । सद्गुरु का अंतकरण इन सभी प्रकार की अग्नियों से परे होता है । उनका चित्त शांत होता है । उनके मार्गदर्शन में साधना करने से सभी प्रकार की अग्नि शांत हो जाती है । संत रज्जब ने अपने गुरु के अंतकरण की महिमा को यहाँ प्रस्तुत किया है ।

संत रविदास

भक्ति परंपरा के संत कवियों में संत कवि रविदास भी उल्लेखनीय हैं । रामानंद की संत परंपरा में वे दीक्षित हुए थें । अत: वे रामानंद के शिष्य थे । संत रविदास ने गुरु महिमा और सत्संग का जोरदार समर्थन किया है । उन्होंने गुरु महिमा को अपने दोहों और वचनों में प्रस्तुत किया है । अन्य भक्त कवियों की ही तरह रविदास जी

का भी मानना है की गुरु ही अज्ञान रूपी अंधकार को दूर कर ज्ञान का प्रकाश दिखाते हैं । गुरु ही मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करते हैं । रविदास जी के शब्दों में –

''गुरु ग्यांन दीपक दीया, बाती दइ जलाय ।
रैदास हरि भगति कारनै, जनम मरन विलमाय ।।''

रविदास कहते हैं कि सद्‌गुरु ने मुझे भक्ति रूपी बाती से युक्त ज्ञान का दीपक दिया । जिससे मुझे ईश्वर की भक्ति का सही मार्ग प्राप्त हुआ और हरि की भक्ति के कारण ही मैं जन्म और मृत्यु के बंधन से मुक्त हो गया।

गोस्वामी तुलसीदास

गोस्वामी तुलसीदास 16 वीं सदी के महान राम भक्त कवि थें । वे नरहरीदास के शिष्य थें । नरहरीदास ने उन्हें 'रामचरितमानस' की रचना के लिए प्रेरित किया । उनके अनुसार गुरु के शरण में जानेवाला व्यक्ति संसार के सभी दु:खों से मुक्त हो जाता है । एक गुरु ही अज्ञान रूपी अंधकार को नष्ट कर ज्ञान रूपी प्रकाश का निर्माण करता है । गुरु महिमा का गान करते हुए तुलसीदास ने लिखा है –

''बंदउ गुरु पद कंज कृपा सिंधु नर रूप हरि।
महामोह तम पुंज जासु बचन रवि कर निकर।''

अर्थात गुरु कृपा के सागर हैं । वे मनुष्य के रूप में भगवान के समान है । गुरु के वचन सूर्य के किरणों के समान हैं, जिनके कारण शिष्य के जीवन का अज्ञान रूपी अंधकार दूर हो जाता है । 'बालकांड' के प्रारंभ में ही गुरु वंदना करते हैं हुए तुलसीदास जी ने कहा है बड़े-बड़े साधक, सिद्ध और सुजान अपनी आँखों में सुअंजन लगाकर पर्वतों, वनों और भूतल के कौतुक को देख लेते हैं । इसका कारण यह है कि गुरु के चरणों की धुल कोमल और सुंदर काजल है, जो आँखों के लिए अमृत के समान है । इस काजल से नेत्र दोष दूर हो जाता है। यहाँ पर तुलसीदास ने गुरु के चरणों की धूल की महिमा प्रस्तुत की है ।

सूरदास

वल्लभाचार्य सूरदास के गुरु थें, जिन्होंने उन्हें कृष्ण भक्ति का मार्ग दिखाया । सूरदास ने वल्लभाचार्य के मार्गदर्शन में कृष्ण के बाल रूप का बहुत ही सुंदर वर्णन अपनी रचना 'सूर-सागर' में किया है । सूरदास ने गुरु और अपने आराध्य श्री कृष्ण को एक ही माना है । उन्होंने गुरु के प्रति अपनी अटूट श्रद्धा प्रकट करते हुए गुरु के चरणों को ही अपने जीवन का आधार माना है । उनका यह भी कहना था की गुरु के बिना जीवन में ज्ञान का प्रकाश नहीं आ सकता । गुरु की कृपा और उनके ज्ञान की महिमा का वर्णन करते हुए सूरदास ने लिखा है।

''गुरु बिनु ऐसी कौन करै ?
माला-तिलक मनोहर बाना, लै सिर छत्र धरै ।
भवसागर तैं बूड़त राखै, दीपक हाथ धरै ।
सूर स्याम गुरु ऐसौ समरथ, छिन मैं ले उधरै ।।''

सूरदास कहते हैं कि गुरु अत्यंत शक्तिशाली हैं। गुरु अपने शिष्य के लिए जो काम करते हैं, वह अन्य कोई नहीं कर सकता। माला, तिलक और सुंदर वेशभूषा धारण कर और सिर पर छत्र धारण करने वाले गुरु अपने शिष्य को सांसारिक सागर में डूबने से बचाते हैं। उसके हाथ में ज्ञान रूपी दीपक थमा देते हैं । जिस ज्ञान से वह सांसारिक मोह-माया से बच सके। गुरु ऐसे शक्तिशाली होते हैं, उनमें इतना सामर्थ्य होता है कि वे क्षणभर में ही किसी का भी उद्धार कर सकते हैं । इस तरह सूरदास ने गुरु महिमा का गान किया है।

मीराबाई

कृष्ण भक्त कवयित्री मीराबाई के गुरु रविदास थें । मीराबाई ने भी अपनी रचनाओं में गुरु शिष्य परंपरा को महत्वपूर्ण स्थान दिया है । मीरा को भक्ति का मार्ग उनके गुरु ने दिखाया था । इसीलिए वह अपने गुरु को कभी भी भूलती नहीं । गुरु कृपा की महिमा का गान करते हुए मीराबाई ने कहा है -

''पायो जी मैंने राम रतन धन पायो ।
वस्तु अनमोलक दी म्हारे सतगुरु किरपा करि अपनायो ।।''

मीराबाई गुरु की महानता को स्वीकार करती है। वह कहती है कि गुरु से दीक्षा प्राप्त कर अर्थात् ज्ञान प्राप्त करके ही कोई भी शिष्य परम तत्व प्राप्त कर सकता है। गुरु के ज्ञान एवं मार्गदर्शन से ही भक्ति का मार्ग बिना किसी बाधा से पूरा हो सकता है। जब वह संत कवि रविदास से गुरु की दीक्षा लेती है, तब उनके प्रति समर्पित होकर कहती है -

''मेरा मन लागो गुरु सों,अब ना रहूँगी अटकी।
गुरु मिलया रैदास जी म्हांले, दीनी ज्ञान की गुटकी।''

इस तरह उपर्युक्त भक्ति परंपरा के इन कवियों के अतिरिक्त संत गुरु नानक, संत सुंदरदास, संत कुंभनदास, नंददास आदि संत कवियों के साहित्य में भी गुरु महिमा का वर्णन मिलता है । सभी संत कवियों ने अपने जीवन में गुरु को अनन्य साधारण महत्व दिया है। गुरु उनके लिए सर्वोपरी हैं । गुरु के ज्ञान और मार्गदर्शन से ही इन कवियों ने अपने जीवन के लक्ष्य को साध्य किया है। अत: इन्होंने अपनी रचनाओं में गुरु महिमा का वर्णन बड़े ही तन्मयता से किया है। इसी कारण भक्ति परंपरा के संत कवियों का काव्य और उनकी गुरु महिमा हिंदी साहित्य तथा भारतीय भक्ति परंपरा की एक अमूल्य निधि बन चुकी है ।

1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न ।

अ) नीचे दिए गए बहु-विकल्पी प्रश्नों के सही विकल्प चुनिए ।

1) ब्रह्म रूप प्रकाश किसे माना गया है?

अ) संत ब) गुरु क) शिष्य ड) भक्त

2) किसका स्थान ईश्वर से भी ऊपर स्वीकार किया गया है?

अ) आत्मा ब) गुरु क) जीव ड) भक्त

3) गुरु को ईश्वर से भी अधिक महत्व देना किन कवियों की एक सर्वमान्य विशेषता है?

अ) संत ब) जैन क) शृंगारी ड) नाथ

4) भारतीय संस्कृति में किसे प्रथम गुरु के रूप में मान्यता दी गई है?

अ) ब्रह्मा ब) विष्णु क) महादेव ड) दत्तात्रेय

5) गुरु-शिष्य परंपरा को किस व्यवस्था ने जीवित रखा?

अ) गुरुकुल ब) भक्ति कुल क) वेद कुल ड) भक्त कुल

6) गुरु–शिष्य परंपरा का सर्वोत्तम उदाहरण किसे माना जाता है?

अ) पुराण को ब) वेद को क) उपनिषद को ड) महाभारत को

7) ज्ञान प्राप्त करने के लिए गुरु के पास जाने का विधिवत मार्ग किस में बताया गया है?

अ) प्रश्नोपनिषद ब) उपनिषद क) मनुस्मृति ड) मुंडकोपनिषद

8) शीश देकर भी गुरु की प्राप्ति कौन करना चाहते हैं?

अ) रविदास ब) दादू दयाल क) कबीर ड) रामानंद

9) निर्गुण भक्त संतों ने किसे सर्वोपरि माना है?

अ) भक्ति को ब) परमात्मा को क) ज्ञान को ड) गुरु को

10) शंकराचार्य किस गुरु परंपरा के आचार्य हैं?

अ) अद्वैत ब) द्वैत क) दर्शन ड) वेद

11) भारतीय संस्कृति और साहित्य का स्वर्णिम युग किसे माना जाता है?

अ) आदिकाल को ब) रीतिकाल को क) भक्तिकाल को ड) आधुनिक काल को

12) भक्ति की लहर को उत्तर भारत में प्रवाहित करने में किसने महत्वपूर्ण योगदान दिया है?

अ) रामानंद ब) कबीर क) रामानुज ड) दादू दयाल

13) कबीर ने किसे अपना गुरु माना था?

अ) राघवानंद ब) रामानंद क) नरहरिदास ड) वल्लभाचार्य

14) दादू दयाल किस शाखा के प्रसिद्ध कवि है?

अ) ज्ञानाश्रयी ब) प्रेमाश्रयी क) कृष्ण भक्ति ड) राम भक्ति

15) तुलसीदास को 'रामचरितमानस' की रचना के लिए किसने प्रेरित किया?

अ) राघवानंद ब) रामानंद क) नरहरिदास ड) वल्लभाचार्य

16) सूरदास को कृष्ण भक्ति का मार्ग किसने दिखाया?

अ) राघवानंद ब) रामानंद क) नरहरिदास ड) वल्लभाचार्य

17) मीराबाई किसकी शिष्या थी?

अ) रविदास ब) रामानंद क) नरहरिदास ड) वल्लभाचार्य

18) 'पायो जी मैंने राम रतन धन पायो' किसकी काव्य पंक्ति है?

अ) कबीर ब) सूरदास क) मीराबाई ड) तुलसीदास

19) 'व्यक्ति का भविष्य गुरु ही संवार सकता है' ऐसा किसने कहा है?

अ) राघवानंद ब) आचार्य चाणक्य क) नरहरिदास ड) वल्लभाचार्य

20) किसके जन्मोत्सव को गुरु पूर्णिमा के रूप में मनाया जाता है?

अ) वेद व्यास ब) रामानंद क) शंकराचार्य ड) वल्लभाचार्य

21) भक्ति काल को 'स्वर्ण काल' किसने कहा है?

अ) जॉर्ज ग्रियर्सन ब) आ. रामचंद्र शुक्ल

क) आ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ड) आ. नंददुलारे वाजपेयी

22) पुष्टिमार्ग की स्थापना किसने की?

अ) सूरदास ब) वल्लभाचार्य क) नंददास ड) शंकराचार्य

23) भक्ति परंपरा की मुख्यत: कितनी धाराएँ हैं?

अ) दो ब) चार क) छ: ड) आठ

24) कबीर किस शाखा के प्रमुख कवि हैं?

अ) ज्ञानाश्रयी ब) प्रेमाश्रयी क) राम भक्ति ड) कृष्ण भक्ति

25) सूफी मत से कौन-सी काव्य धारा प्रभावित है?

अ) ज्ञानाश्रयी ब) प्रेमाश्रयी क) राम भक्ति ड) कृष्ण भक्ति

ब) नीचे दिए गए प्रश्नों के विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए ।

1) भारतीय संस्कृति में ------- को बहुत ही आदर का स्थान प्राप्त है ।

अ) गुरु ब) भक्त क) संत ड) शिष्य

2) ------- शब्द का अर्थ है -ज्ञान प्राप्ति के लिए गुरु के पास जाना ।

अ) वेद ब) उपनिषद क) कठोपनिषद ड) प्रश्नोपनिषद

3) कबीर को ------- के सानिध्य में जीवन दर्शन की प्राप्ति हुई।

अ) रामानंद ब) रामानुजाचार्य क) गुरु नानक ड) दादू दयाल

4) ------- में गुरु को ईश्वर का रुप माना है।

अ) वेदों ब) पुराणों क) अध्यात्म ड) दर्शन

5) रामानंद ------- के शिष्य थें ।

अ) शंकराचार्य ब) राघवानंद क) निम्बार्क ड) नरहरीदास

6) दादू पंथ की स्थापना ------- ने की ।

अ) शंकराचार्य ब) दादू दयाल क) कबीर ड) वृद्धानंद

7) गोस्वामी तुलसीदास ------- के शिष्य थें ।

अ) शंकराचार्य ब) राघवानंद क) निम्बार्क ड) नरहरीदास

8) 'सूरसागर' ------ की प्रसिद्ध रचना है।

अ) शंकराचार्य ब) सूरदास क) तुलसीदास ड) नरहरीदास

9) मीराबाई ------- सदी की एक महान कृष्ण भक्त कवयित्री है।

अ) १४ वीं ब) १५ वीं क) १६ वीं ड) १७ वीं

10) भारतीय समाज के नैतिक और आध्यात्मिक विकास में ------- परंपरा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है ।

अ) गुरु-शिष्य ब) भक्त कवि क) संत कवि ड) आध्यात्म दर्शन

11) भक्ति कालीन काव्य में ------- के बिना किसी भी प्रकार के ज्ञान की कल्पना करना असंभव था ।

अ) कवि ब) संत क) भक्त ड) गुरु

12) प्रेमाश्रयी शाखा के कवियों के केंद्र में ------- है।

अ) दर्शन ब) प्रेम क) ज्ञान ड) भक्ति

13) ------- काव्य की मुक्तक रचनाएँ अधिक पाई जाती है।

अ) ज्ञानाश्रयी ब) प्रेमाश्रयी क) राम भक्ति ड) कृष्ण भक्ति

14) 'रामचरितमानस' में श्रीराम जी का -------- रूप में चित्रण हुआ है ।

अ) लोकरंजन ब) लोकमंगलकारी क) लोकहित वादी ड) लोक गुणकारी

15) वात्सल्य रस का बहुत ही सुंदर वर्णन --------- ने किया है ।

अ) सूरदास ब) तुलसीदास क) रविदास ड) नंददास

1.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ ।

1. गुरु - शिक्षक, मार्गदर्शक, या आध्यात्मिक मार्गदर्शक।
2. शिष्य - विद्यार्थी, अनुयायी, या गुरु का अनुयायी।
3. दीक्षा - गुरु द्वारा शिष्य को दी जाने वाली आध्यात्मिक शिक्षा।
4. आश्रम - एक आध्यात्मिक समुदाय या एक गुरु के अधीन रहने वाला समुदाय।
5. साधना - आध्यात्मिक अभ्यास या साधना जो आत्म-साक्षात्कार के लिए की जाती है।
6. तपस्या - आत्म-संयम और आत्म-शुद्धि के लिए की जाने वाली कठोर साधना।
7. गुरु-शिष्य परंपरा - गुरु और शिष्य के बीच का संबंध, जो आध्यात्मिक ज्ञान और अनुभव को आगे बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण है।
8. रस - भावना, अनुभूति या साहित्यिक कृति में व्यक्त भाव ।
9. भाव - भावना, अनुभूति या मन की स्थिति ।
10. आत्म - साक्षात्कार - अपने आप को जानना या समझाना ।
11. मोक्ष - आत्मा की मुक्ति या आत्म-साक्षात्कार की प्राप्ति ।
12. द्वैत - दो होने का भाव ।

13. अद्वैत – एकता या दो नहीं ।
14. संप्रेषण – भेजना, पहुँचाना । (ज्ञान, विचारों, भावनाओं, सूचनाओं को एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति या समूह में भेजना)
15. स्रोत – कोई भी चीज या स्थान जहाँ से कोई चीज आती है या उत्पन्न होती है ।
16. कर्मकांड – धार्मिक क्रियाओं से जुड़े कर्म ।
17. निर्गुण – गुणों से रहित या निराकार ।
18. सगुण – गुणों सहित या रूप सहित ।
19. दर्शन – किसी चीज को देखना, समझना या अनुभव करना ।
20. मिथ्याचार – झूठा, पाखंडी या दिखावटी व्यवहार ।
21. पांडित्य – विद्वत्ता, पंडित होने का भाव, ज्ञान से युक्त ।
22. आराधना – किसी देवी-देवता या पूजनीय व्यक्ति के प्रति श्रद्धा, प्रेम और सम्मान प्रकट करना ।
23. महिमा – महानता, गौरव या यश । किसी व्यक्ति या वस्तु की श्रेष्ठता, प्रतिष्ठा या महत्व को दर्शाना ।

1.6 स्वयं अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर ।

अ) दिए गए बहु-विकल्पी प्रश्नों के सही विकल्प ।

1) ब) गुरु	2) ब) गुरु	3) अ) संत	4) क) महादेव
5) अ) गुरुकुल	6) ब) वेद को	7) अ) प्रश्नोपनिषद	8) क) कबीर
9) ड) गुरु को	10) अ) अद्वैत	11) क) भक्ति काल को	12) अ) रामानंद
13) ब) रामानंद	14) अ) ज्ञानाश्रयी	15) क)नरहरिदास	16) ड) वल्लभाचार्य
17) अ) रविदास	18) क) मीराबाई	19) ब) आचार्य चाणक्य	20) अ) वेद व्यास
21) अ) जॉर्ज ग्रियर्सन	22) ब) वल्लभाचार्य	23) अ) दो	24) अ) ज्ञानाश्रयी
25) ब) प्रेमाश्रयी			

ब) दिए गए प्रश्नों के विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति ।

1) अ) गुरु	2) ब) उपनिषद	3) अ) रामानंद	4) अ) वेदों
5) ब) राघवानंद	6) ब) दादू दयाल	7) ड) नरहरीदास	8) ब) सूरदास
9) क) 16 वीं	10) अ) गुरु-शिष्य	11) ड) गुरु	12) ब) प्रेम
13) ड) कृष्ण भक्ति	14) ब) लोकमंगलकारी	15) अ) सूरदास	

1.7 सारांश ।

1. प्राचीन काल से लेकर आज तक गुरु-शिष्य परंपरा की यह शृंखला ज्ञान के सभी क्षेत्रों में पायी जाती है । भारतीय तथा हिंदी साहित्य में इस गुरु परंपरा का अपना एक अलग एवं महत्वपूर्ण स्थान है ।
2. भारतीय साहित्य में गुरु परंपरा का उल्लेख प्राचीन काल से ही मिलता है । वेदों, उपनिषदों, रामायण, महाभारत और पुराणों में गुरु-शिष्य परंपरा के अनेक उदाहरण दिखाई देते हैं ।
3. गुरु केवल अपने ज्ञान से समाज सुधार एवं समाज को मार्गदर्शन ही नहीं करता रहा है, बल्कि समाज को क्रांति की दिशा दिखाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है । इसीलिए भारतीय संस्कृति में गुरु को बहुत ही आदर का स्थान प्राप्त है ।
4. गुरु परंपरा के कारण ही वेद, उपनिषदों, भगवत् गीता तथा अन्य ज्ञान के स्रोतों में निहित ज्ञान आने वाली पीढ़ियों के पास हस्तांतरित हुआ है ।
5. गुरु परंपरा एक पक्षीय न रहकर द्वि-पक्षीय रही है । गुरु की महत्ता और शिष्य की ज्ञान प्राप्ति की प्रतिबद्धता, दोनों ही इस परंपरा के महत्वपूर्ण भाग रह चुके हैं । गुरु में ज्ञान प्रदान करने और शिष्य में उसे आत्मसात करने की प्रामाणिक प्रवृत्ति थी । इसी कारण यह प्राचीन परंपरा बहुत समृद्ध और प्रसिद्ध रही है ।
6. गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से ही ज्ञान, कला, और आध्यात्मिक आदि अनेक विद्याओं को तथा अन्य क्षेत्रों के ज्ञान को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक संप्रेषित किया जाता रहा है ।
7. भक्ति आंदोलन को भारतीय साहित्य का सबसे बड़ा आंदोलन माना जाता है । इस आंदोलन से जुड़े सगुण और निर्गुण दोनों प्रकार के भक्त कवि संत है । जिन्होंने अपनी रचनाओं में गुरु महिमा का गान किया है ।
8. भक्तिकाल को भारतीय संस्कृति और साहित्य का एक स्वर्णिम युग माना जाता है । इस काल में कई ऐसे महान संत कवि हुए, जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज को नई दिशा प्रदान कर सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त किया । उनकी गुरु परंपरा ने ज्ञान और भक्ति के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है ।
9. भक्ति परंपरा के संत कवियों की गुरु-शिष्य परंपरा में राघवानंद और रामानंद, रामानंद और कबीर, वृद्धानंद और दादू दयाल, रामानंद और रविदास, नरहरिदास और तुलसीदास, वल्लभाचार्य और सूरदास, रविदास और मीराबाई आदि का स्थान उल्लेखनीय है ।
10. भक्ति आंदोलन केवल धार्मिक नहीं था, बल्कि इसने तत्कालीन सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन में अपना उल्लेखनीय योगदान दिया । यह आंदोलन एक दृष्टि से मध्यकालीन भारत में आध्यात्मिक और सामाजिक सुधार का आंदोलन था ।
11. भक्ति परंपरा में भक्ति का, ईश्वर की आराधना का सहज, सरल और सुलभ मार्ग था । इस मार्ग में छोटा-बड़ा, ऊँच-नीच का कोई भेद नहीं था । इसमें शास्त्रीय ज्ञान और कठोर साधना की भी आवश्यकता नहीं थी । केवल ईश्वर के प्रति गहरा प्रेम और आत्म समर्पण ही काफी था । इसी कारण भक्ति परंपरा को अत्यधिक लोकप्रियता प्राप्त हुई ।
12. गुरु का महत्व एवं गुरु महिमा गान भक्ति परंपरा के सभी संत कवियों की एक प्रमुख विशेषता रही है ।
13. भक्ति परंपरा के संत कवियों ने अपनी रचनाओं में गुरु महिमा का वर्णन बड़े ही तन्मयता से किया है । इसी कारण भक्ति परंपरा के संत कवियों का काव्य और उनकी गुरु महिमा हिंदी साहित्य तथा भारतीय भक्ति परंपरा की एक अमूल्य निधि बन चुकी है ।

1.8 स्वाध्याय ।

अ) लघुत्तरी प्रश्न ।

1) उपनिषदों में वर्णित गुरु परंपरा का परिचय दीजिए ।

2) गुरु परंपरा के महत्व पर प्रकाश डालिए ।

3) कबीर की गुरु महिमा पर प्रकाश डालिए ।

4) भक्ति परंपरा की दो मुख्य धाराओं का परिचय दीजिए ।

5) ज्ञानाश्रयी के मुख्य कवियों की गुरु परंपरा पर प्रकाश डालिए ।

6) कृष्ण भक्ति शाखा के प्रमुख कवि सूरदास जी का परिचय दीजिए ।

7) भक्ति परंपरा की गुरु महिमा की विशेषताएँ लिखिए ।

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न ।

1) भारतीय साहित्य और गुरु परंपरा का विवेचन कीजिए ।

2) भारतीय साहित्य में गुरु परंपरा के महत्व को विशद कीजिए ।

3) हिंदी साहित्य की भक्ति परंपरा पर विस्तार से प्रकाश डालिए ।

4) भक्ति परंपरा की प्रमुख विशेषताओं का विवेचन कीजिए ।

5) भक्ति परंपरा के प्रमुख संत कवि और उनकी गुरु-शिष्य परंपरा पर प्रकाश डालिए ।

6) भक्ति परंपरा में वर्णित गुरु महिमा का विवेचन कीजिए ।

7) भक्ति परंपरा के प्रमुख संत कवियों की गुरु महिमा पर प्रकाश डालिए ।

1.9 क्षेत्रीय कार्य ।

1) मराठी का साहित्य और गुरु परंपरा इस विषय पर लघु शोध परियोजना तैयार कीजिए ।

2) महाराष्ट्र के संत कवि और उनकी गुरु-शिष्य परंपरा की सूची बनाइए ।

3) हिंदी भक्ति परंपरा के और मराठी भक्ति परंपरा के प्रमुख संत कवियों की गुरु महिमा का तुलनात्मक अध्ययन कीजिए ।

4) मराठी और हिंदी भाषा के प्रसिद्ध गुरु-शिष्यों की सूची तैयार कीजिए ।

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए ।

1. हिंदी साहित्य का इतिहास - डॉ. नगेंद्र ।
2. हिंदी साहित्य का इतिहास - आ. रामचंद्र शुक्ल ।
3. हिंदी साहित्य की भूमिका - डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी ।
4. हिंदी साहित्य : युग और प्रवृत्तियाँ - डॉ. शिवकुमार शर्मा ।
5. मध्यकालीन कवि और कविता - डॉ.रतनकुमार पाण्डेय ।
6. https://hindisarang.com/sant-kavya-dhara-ke-kavi-aur-unaki-rachnaye/googlešvignette
7. https://www.youtube.com/watch?v=08R-r2šY5X8
8. https://www.youtube.com/watch?v=yWRC58RlTrc

❑❑❑

इकाई क्र. २

गुरु महिमा

अनुक्रम

2.1. उद्देश्य

2.2. प्रस्तावना

3.3. विषय विवेचन

2.3.1. संत साहित्य में गुरु महिमा

2.3.2. सूफी साहित्य में गुरु महिमा

2.3.3. गुरु महिमा की विशेषताएँ

2.4. स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न।

2.5. पारिभाषिक शब्द एवं शब्दार्थ।

2.6. स्वयं अध्ययन के प्रश्न के उत्तर।

2.7. सारांश।

2.8. स्वाध्याय।

2.9 क्षेत्रीय कार्य।

2.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए।

2.1 उद्देश्य :

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप -

1. गुरु शिष्य-परंपरा से परिचित हो जाएँगे।
2. गुरु महिमा से अवगत होंगे।
3. हदी संत साहित्य में वर्णित गुरु महिमा से परिचित होंगे।
4. हिंदी सूफी साहित्य में चित्रित गुरु महिमा से परिचित हो जाएँगे।
5. गुरु महिमा की विशेषताओं से अवगत हो होंगे।

2.2 प्रस्तावना :

भारत में गुरु शिष्य-परंपरा का इतिहास प्राचीन है। प्राचीन काल से भारत में गुरु-शिष्य परंपरा अबाधित गति से बढ़कर चली आ रही है और आज के आधुनिक युग में भी वह निरंतर प्रवाहमान है। शिष्य या साधक के जीवन में गुरु का महत्व अनन्य साधारण है। गुरु वह होता है, जो निस्वार्थ रूप से अपने शिष्य के जीवन का अज्ञान रूपी अंधकार ज्ञान के माध्यम से दूर करें। गुरु ही शिष्य के जीवन को सच्चे मार्ग पर ले जाता है। गुरु ही शिष्य को उसके लक्ष्य तक पहुँचाने का मार्ग दिखाकर उसे मार्ग पर बढ़ने की प्रेरणा देता है। गुरु ही शिष्य के जीवन का सच्चा पथ प्रदर्शक होता है। गुरु ही शिष्य को उसके लक्ष्य तक पहुँचाना है। गुरु ही शिष्य को दुविधा, समस्या, आज्ञान के अंधकार से निकालकर भक्ति, ज्ञान, प्रेम मार्ग पर अग्रेसर करता है। अतः गुरु ही शिष्य को ईश्वर के दर्शन करवाता है और उसे मुक्ति देने का महत्वपूर्ण कार्य करता है। अतः मध्यकालीन संत कवि और सूफी कवियों ने अपनी साहित्यिक रचनाओं में गुरु महिमा का चित्रण विस्तार से किया है। इस इकाई में हम संत कवियों के साहित्य में चित्रित गुरु महिमा, सूफी कवियों के साहित्य में चित्रित गुरु महिमा और गुरु महिमा की विशेषताएँ आदि का समग्रता और सूक्ष्मता से अध्ययन करनेवाले हैं-

2.3.1 संत साहित्य में गुरु महिमा :

प्रस्तावना:

शिक्षक और उसकी भूमिका जिसको भारतीय संस्कृति में गुरु का दर्जा दिया गया है। गुरु की महत्ता, स्तुति, नाम स्मरण, नमन की परंपरा, कृतज्ञता आदि का इतिहास भारतीय संस्कृति में विद्यमान है। मनुष्य जीवन के हर क्षेत्र में गुरु का अपना महत्व रहा है। भक्ति, अध्यात्म, प्रेम, सार सत्व, अन्य अनेक अनुशासन में गुरु का महत्व अबाधित रूप से चला आ रहा है।

''गुरुब्रह्मा, गुरुविष्णु, गुरुदेवो महेश्वरा।
गुरु साक्षात परब्रह्मः तस्मै श्री गुरुवे नमः।।''

गुरु के महत्व को प्रकट करनेवाला यह गुरु स्तोत्र सबसे अधिक प्रचलित है। इसका अर्थ होता है कि गुरु ही ब्रह्म है, गुरु ही विष्णु है और गुरु ही भगवान है। ऐसे गुरु को मेरा नमन है। हमारी प्राचीन परंपराएं एवं संस्कृति में गुरु-शिष्य परंपरा शीर्षस्थ है और आज भी यह अबाधित रूप से चली आ रही है। अतः गुरु और शिष्य का रिश्ता ईश्वर और भक्त से बढ़कर हैं। शिष्य के जीवन का सही और सच्चा पथ प्रदर्शक, जीवन को संस्कारित करने वाला गुरु ही होता है। मनुष्य अपने जीवन में मुक्ति और ईश्वर प्राप्ति की कामना करता है। उसे प्रदान करनेवाला गुरु ही होता है। इसलिए मनुष्य के जीवन में गुरु का स्थान चरम शिखर पर हैं। जिसे वंदनीय एवं सम्मान जनक कहा गया है। अतः इस गुरु की महिमा और महानता को समझने से पहले हमें 'गुरु' इस शब्द की संकल्पना को समझना आवश्यक है।

'गुरु' शब्द का शाब्दिक अर्थ होता है- पूज्य, शिक्षक, पूज्य व्यक्ति, मार्गदर्शक या शिक्षक। 'गुरु' यह शब्द संस्कृत से लिया गया है। इसका शाब्दिक अर्थ होता है- अंधकार को दूर करने वाला।

अर्थात् गुरु अपने ज्ञान से शिष्य के जीवन का अज्ञान रूपी, समस्या रूपी अंधकार दूर करता है और शिष्य को सर्वांगिण ज्ञान देकर उसे मनुष्य के रूप में जीवन जीने के लिए तैयार करता है।

प्राचीन भारतीय परंपरा में ज्ञान को सर्वोपरि माना गया है। ज्ञान को पहुँचाने वाले, ज्ञान को देनेवाले गुरु को ज्ञान का स्रोत या भंडार मानते हुए गुरु को अत्याधिक महत्व प्राप्त हुआ है। शिष्य से लेकर राजपुत्र तक गुरु सेवा की एक लंबी परंपरा रही है। गुरु-शिष्य परंपरा भारतीय संस्कृति में प्राचीन काल से देखी जा सकती हैं। इस परंपरा में बदलती स्थितियों के अनुसार बदलाव की स्थिति समय-समय के अनुसार आई है। परिवर्तन के साथ वह रूढ़ियों जो छोड़ते हुए हमने गुरु-शिष्य परंपरा का स्वागत आज भी किया। चाहे मध्यकाल हो या आधुनिक भारत हो। हम उस गुरु-शिष्य संबंध की पावनता और पवित्रता को स्वीकारते हुए उसका आदर करते हैं। देश दुनिया में अनेक परंपराएँ, संस्कृतियाँ आयी, परंतु गुरु-शिष्य एक ऐसी परंपरा है, जिसमें गुरु-शिष्य संबंधों में बदलाव आया। परंतु यह बदलाव निरंतर रूप से सकारात्मक रहा है। शिष्य का गुरु के प्रति समर्पण का या नतमस्तक होने का भाव अभी भी बना हुआ है। आज भी हम बड़ों और गुरुजनों के चरणों को स्पर्श कर आशीर्वाद लेते हैं, ताकि हमारे जीवन में गुरु का मार्गदर्शन एवं आधार रहे। इसलिए शिष्य का सच्चा पथ प्रदर्शक उसके जीवन का सच्चा सृजनकर्ता गुरु ही होता है।

हिंदी साहित्य के मध्यकाल के भक्ति काल को हिंदी साहित्य का स्वर्ण युग माना जाता है। उसमें गुरु-शिष्य परंपरा दिखाई देती है। जिसमें अनेक संत महात्मा होकर चले गए। जैसे- संत कबीर, संत तुलसीदास, संत नामदेव, संत मीराबाई, संत सूरदास, संत रविदास, संत गुरु नानक, संत दादू दयाल, संत पीपा, संत सहजाबाई, संत जगत नंदन, संत नरहरी महाराज आदि का नाम लिया जा सकता है। इन संत कवियों की रचना में गुरु महिमा का गान विशेष रूप से दिखाई देता है। मध्यकाल के इन संत कवियों ने अपने जीवन में गुरु की महत्ता स्वीकार की। इन्हें ज्ञात है कि जैसे ईश्वर प्राप्ति के लिए अथवा जीवन से मुक्ति पाने के लिए ईश्वर दर्शन आवश्यक हैं और मोक्ष प्राप्ति के लिए ज्ञान आवश्यक हैं। उसके बिना मोक्ष प्राप्त नहीं होता। परंतु सद्गुरु के सात्विक संबंध के बिना, गुरु के आशीर्वाद के बिना ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता। मनुष्य ज्ञान प्राप्ति से ही इस भवसागर से मुक्त होता है। ऐहिक-दैहिक तापों से मुक्त होता है। यह सब उसे तब मिलता है जब शिष्य पर गुरु की कृपा बनी रहती है।

भारतीय संत परंपरा में आज तक अनेक संत महात्मा होकर चले गए। जिन्होंने अपनी वाणी, भक्ति और ज्ञान के माध्यम से ईश्वर प्राप्ति की कामना की। हर मनुष्य अपने जीवन में परमात्मा की प्राप्ति चाहता है। उसकी एक अभिलाषा (इच्छा) रहती है कि मृत्यु आने से पहले वह परमात्मा के दर्शन करें। इसलिए हर भक्त अपनी भक्ति से परमात्मा को प्राप्त करना चाहता है। इसी परमात्मा तक पहुँचने के लिए उसे ज्ञान, भक्ति, अच्छा आचरण, सात्विक मूल्य, समर्पण, आदि देने का काम केवल और केवल गुरु ही करता है। इसलिए भक्ति मार्ग दिखानेवाला और उस भक्ति मार्ग पर निरंतर बढ़ने की प्रेरणा देने का काम गुरु ही करता है। गुरु ही मानवी जीवन का सच्चा मार्गदर्शक होता है। जिस पर चलकर मनुष्य अपने जीवन को सार्थक बनाता है।

अतः इसी कारण भारतीय संत परंपरा में गुरु का महत्व अनन्य साधारण है। भारतीय संत परंपरा में आज तक अनेक संत होकर चले गए। जैसे - संत कबीर, संत तुलसीदास, संत नामदेव, संत मीराबाई, संत सूरदास, संत रविदास, संत गुरु नानक, संत दादू दयाल, संत पीपा, संत सहजाबाई, संत जगत नंदन, संत नरहरी महाराज आदि के नाम प्रमुखता से लिए जा सकते हैं। इन संत कवियों ने अपनी वाणी ज्ञान और गुरु भक्ति के माध्यम से समाज सुधार का काम किया। लोगों में व्याप्त कर्मकांड, धर्मांधता, रूढ़ी, परंपराएँअज्ञान आदि को दूर कर गुरु की महत्ता से लोगों को अवगत कराकर ईश्वर प्राप्ति का मार्ग दिखलाया। सारे संत कवि अपने जीवन में धैर्य

प्राप्ति के लिए स्वंय पर गुरु की कृपा बनी रहना आवश्यक मानते हैं। वह अपने जीवन में गुरु को ही सर्वोपरि मानते हैं। संत कवियों ने अपने साहित्य में गुरु के प्रति समर्पण, श्रद्धा, आस्था, विश्वास, प्रेम, उसके महत्व, उसका गुणगान आदि महिमा का गान बड़ी तन्मयता से किया है। जिसे हम निम्नांकित रुप में देख सकते हैं।

संत कबीर :

संत कबीर हिंदी साहित्य के भक्ति काल के निर्गुण काव्य धारा के प्रमुख संत कवि है। उन्होंने अपने जीवन में रामानंद जी को अपना गुरु माना था। वह अपने गुरु को ही जीवन में सर्वोपरि मानते हैं। वह अपनी साखियों में कहते हैं कि –

''सतगुरु की महिमा अनंत, अनंत किया उपकार।
अनंत लोचन उघड़िया, अनंत दिखावण हार।।''

अर्थात कबीर कहते हैं कि सद्‌गुरु की महिमा का कोई अंत नहीं है । वह असीमित है। क्योंकि मेरे सद्‌गुरु ने मुझ पर अनेक उपकार किए हैं। जीवन रूपी माया के कारण मुझे सत्य दिखाई नहीं दे रहा था। परंतु सतगुरु की कृपा के कारण मेरी ज्ञान रूपी आँखें खुल गई और मुझे सत्य के दर्शन हुए और उन्होंने मुझे ईश्वर के अर्थात् सत्य के दर्शन करवाए। इस तरह कबीर ने अपने जीवन में होनेवाली गुरु की महानता का वर्णन किया है और ईश्वर को दर्शन कराने वाले गुरु की महिमा का गान किया है।

कबीर गुरु को अपने जीवन में सर्वश्रेष्ठ स्थान देते हुए कहते हैं कि गुरु अपने ज्ञान से शिष्य की विकृतियों को दूर करता है। ऐसे गुरु के प्रति समर्पण भाव से युक्त होकर कबीर कहते हैं कि,

''यह तन विष की बेलरी, गुरु अमृत की खान।
सीस दिए जो गुरु मिले, तो भी सस्ता जान।।''

संत तुलसीदास :

संत शिरोमणि तुलसीदास हिंदी साहित्य के भक्तिकाल के रामभक्त काव्यधारा के प्रमुख प्रवर्तक कवि हैं। उन्होंने अपने 'रामचरितमानस' इस ग्रंथ में गुरु महिमा का वर्णन किया है। संत तुलसीदास जी मानते हैं कि शास्त्र और साहित्य में गुरु का महत्व ईश्वर से भी बढ़कर है क्योंकि गुरु के माध्यम से ही कोई भी शिष्य अपने लक्ष्य तक का सफर तय कर सकता है। संत तुलसीदास ने राम के चरित्र पर 'रामचरितमानस' जैसे महान महाकाव्य का निर्माण किया। जो एक महान हिंदू ग्रंथों में से एक है।

वे इसे लिखने से पूर्व ही इसे पूरा करने की कामना करते हुए पहले गुरु का स्मरण करते हैं। अपने गुरु का स्मरण करते उन्होंने लिखा है –

''बंदऊँ गुरु पद कंज कृपा सिंधु नररूप हरी।
महामोह तम पुंज जासु बचन रबि कर निकर।।''

अर्थात् मैं कुछ कार्य करने से पहले गुरु के चरणों में वंदन करता हूँ। क्योंकि गुरु की कृपा से ही अनिष्ट रूपी अंधकार मिट जाता है। इसलिए गुरु वंदना पूजनीय है। हर परिस्थिति में स्मरण का विषय है। इसलिए 'रामचरितमानस' जैसे महान काव्य और राम जैसे महान चरित्र को चित्रित करने से पहले संत तुलसीदास ज्ञानी

गुरु की वंदना करते हैं। संत तुलसीदास अपने आराध्य का वर्णन करने के लिए अपने गुरु के चरणों की रज को भी पवित्र मानते हैं। वह जानते हैं कि गुरु के ज्ञान के माध्यम से ही परमात्मा तक पहुँचा जा सकता है। जो हर समय हर कण-कण में व्याप्त है। वह अविनाशी है, अजर अमर है, उनके दर्शन गुरु के बिना संभव नहीं हैं। अतः गुरु के बिना अपने आराध्य तक पहुँचा ही नहीं जा सकता। इसलिए गुरु को सही पथ प्रदर्शक, ज्ञानी, ईश्वर से भी बढ़कर मानते हुए संत तुलसीदास कहते हैं -

''गुरू बिनु भव निधि तरई न कोई।
जौं बिरंची संकर राम होई।।''

संत सूरदास :

भक्तिकाल के कृष्णभक्त कवियों में संत सूरदास जी का स्थान शीर्षस्थ है। सूरदास ने अपने आराध्य कृष्ण का गुणगान अपनी साहित्यिक रचनाओं में किया है। सूरसागर, साहित्य लहरी, सूरसारावली इन महत्वपूर्ण रचनाओं में सूरदास ने अपनी गुरु भक्ति का गान किया है। वह एक महान कवि, संत और संगीतकार थें। वह अपने गुरु वल्लभाचार्य जी के प्रति श्रद्धा और आदर रखते हैं। अठारह साल की उम्र में ही गौ घाट पर वल्लभाचार्य जी से भेंट के उपरांत उनका जीवन बदल जाता है और वह कृष्ण भक्ति में रंग जाते हैं। गुरु महिमा का वर्णन करते हुए संत सूरदास जी लिखते हैं कि,

''गुरु बिन ऐसी कौन करैं?
माला-तिलक मनोहर बाना, लै सिर छत्र धरें।
भवसागर तैं बूड़त रखें, दीपक हाथ धरैं ।
सूर स्याम गुरु ऐसौं समरथ, दिन मैं ले उधरैं।।''

अर्थात् सूरदास कहते हैं कि गुरु अत्यंत शक्तिशाली हैं। गुरु अपने शिष्य के लिए जो काम करता है वह अन्य कोई नहीं कर सकता। माला, तिलक और सुंदर वेशभूषा धारण कर और सर पर छत्र धारण करने वाला गुरु अपने शिष्य को सांसारिक सागर में डूबने से बचाता है। उसके हाथ में ज्ञान रूपी दीपक थमा देता है। जिस ज्ञान से वह सांसारिकता से बच सके। गुरु ऐसा शक्तिशाली होता है, उसमें इतना सामर्थ्य होता है कि वह क्षणभर में ही किसी का भी उद्धार कर सकता है। इस तरह सूरदास ने अपने साहित्य में गुरु महिमा का गान किया है।

संत मीराबाई :

संत मीराबाई भी कृष्ण भक्त कवि है। जिसे दरद दीवानी या प्रेम दीवानी कहा गया है। संत मीराबाई कृष्ण को अपना आराध्य मानती हुई उसके प्रति दाम्पत्य भाव की भक्ति करती है। संत मीराबाई का मध्यकाल के कृष्णभक्ति काव्यधारा में महत्वपूर्ण स्थान है। मीराबाई रविदास को अपना गुरु मानती हैं। अतः अपने काव्य में मीराबाई ने अपने गुरु रविदास के प्रति श्रद्धा, आदर, स्नेह, समर्पण, महत्व, आध्यात्मिकता, मार्गदर्शन,भक्ति मार्ग को दिखानेवाला आदि का वर्णन किया है। मीराबाई की कृष्ण के प्रति समर्पण भाव की भक्ति है। मीरा भक्तिमार्ग में भी गुरु की महानता को स्वीकार करती है। वह कहती है कि गुरु से दीक्षा प्राप्त कर अर्थात् ज्ञान प्राप्त करके ही कोई भी शिष्य परम तत्व प्राप्त कर सकता है। गुरु के ज्ञान एवं मार्गदर्शन से ही भक्ति का मार्ग अबाध गति से पूरा हो सकता है। जब वह संत कवि रैदास से गुरु की दीक्षा लेती है, तब वह गुरु के प्रति समर्पित होती है। अपनी पदावली 'मीराबाई की पदावली' में मीरा कहती है -

''मेरा मन लागो गुरु सों, अब ना रहूँगी अटकी।
गुरु मिलया रैदास जी म्हांले, दीनी ज्ञान की गुटकी।''

अतः मीरा ने अपनी पदावली में गुरु महिमा का गान किया है।

संत रविदास (रैदास) :

संत रैदास भी मध्यकालीन भक्त कवि है। उन्होंने भी अपने जीवन में काव्य रचनाएँ की हैं। वे भक्त कवि होने के कारण इनके काव्य में भक्ति का पुट अधिक मिलता है। वे अपने कर्म पर विश्वास करते थें और अत्यंत ईमानदार और समय के पक्के थें। वे मध्यकाल के एक महान भारतीय संत और कवि थें। वे निर्गुणवादी थें। उन्हें संत शिरोमणि और गुरु की उपाधि दी गई है। उनके भजन, दोहे, पद 'गुरुग्रंथ साहब' में संकलित है। उनके गुरु 'श्री रामानंद जी' थें। रविदास के पदों में गुरु की महत्ता का वर्णन मिलता है। जिसमें गुरु को ज्ञान का स्रोत, एक सच्चा मार्गदर्शक, मुक्ति का प्रणेता, भक्ति की प्रेरणा आदि का चित्रण मिलता है। कवि रविदास गुरु को प्राथमिकता देते हुए कहते हैं –

''गुरु की कृपा से, सब ज्ञान पाया।
गुरु कृपा बिना, अंधा रहा।''

अर्थात् गुरु की कृपा से ही मुझे सारा ज्ञान प्राप्त हुआ है। गुरु ज्ञान का विस्तृत स्रोत हैं। गुरु कृपा के बिना मनुष्य अंधे की तरह भटकता रहता है। इस तरह उनके अनेक पद हैं, जिसमें रविदास अपने गुरु की महानता का वर्णन करते हैं।

संत दादू दयाल :

संत दादू दयाल भी संत परंपरा के महान संत कवि हैं। लोकोक्तियों के अनुसार दादू दयाल के गुरु का नाम 'बुड्ढन बाबा' बताया जाता है। परंतु दादू दयाल ने अपनी वाणी में कहीं भी अपने गुरु के नाम का जिक्र नहीं किया। दादू अपने पदों में गुरु को ज्ञान और प्रेम का स्रोत बताते हैं, जो भक्त को ईश्वर से मिलाते हैं। उनका मानना है कि गुरु के बिना शिष्य परमात्मा अर्थात् ब्रह्मा को जान नहीं सकता। गुरु का उपदेश आत्मसंयम और ब्रह्मज्ञान के लिए अति आवश्यक है। दादू दयाल गुरु को प्रेम और ज्ञान का स्रोत बताते हुए कहते हैं कि –

''भरि भरि प्याला प्रेम रस, अपनणैं हाथि पिलाइ।
सद्‌गुरु सदकै किया, दादू बलि बलि जाई।।''

अर्थात् सद्‌गुरु ने मुझे प्रेम और ज्ञान भरे प्याले से प्रेम रस पिलाया है। ऐसे गुरु पर मैं अपने प्राण न्यौछावर कर देता हूँ।

संत नामदेव :

संत नामदेव मराठी भाषा के संत कवि हैं। परंतु हिंदी भाषा में भी उन्होंने भक्ति का गान किया है। संत नामदेव के गुरु विसोबा खेचर थें। संत नामदेव जी ने अपने गुरु विषयक पदों में गुरु महिमा का वर्णन किया है। उनकी गुरुबाणी का संकलन 'गुरुग्रंथ साहब' में मिलता है। उनके मतानुसार गुरु शिष्य को या साधक को ज्ञान, भक्ति और मोक्ष का मार्ग दिखाता है। वह कहते हैं कि –

''गुरु सांचे तो सब सांचा, और झूठा सब ठौ ।
गुरु के सम न कोऊ है, गुरु गोविंद सिरमा।।''

इस तरह इन संत कवियों के अतिरिक्त संत मलूकदास, संत गुरु नानक, संत पीपा, संत नरहरीदास, संत जगदनंदन महाराज आदि संत कवियों के साहित्य में गुरु महिमा का गान प्रमुखता से हुआ है। सभी संत कवियों ने अपने जीवन में गुरु को अनन्य साधारण महत्व दिया है। उनके दिए गए ज्ञान और मार्गदर्शन तथा उपदेशों के आधार पर शिष्य ने अपने जीवन के लक्ष्य को साध्य किया है। अपने साहित्य में इन संत कवियों ने गुरु महिमा का चित्रण बड़ी तन्मयता से किया है। अतः हिंदी संत कवियों की साहित्यिक वाणी 'गुरु महिमा' की अमृत की खान है।

2.3.2 सूफी साहित्य में गुरु महिमा

प्रस्तावना :

हिंदी साहित्य के मध्यकाल का प्रथम चरण भक्तिकाल को हिंदी साहित्य का स्वर्ण युग माना जाता है। इसी युग में प्रमुख रूप से दो काव्यधाराओं का प्रचलन रहा। जिसमें भक्ति के माध्यम से धार्मिक एवं सामाजिक सुधार की बात की गई। निर्गुण भक्ति और सगुण भक्ति की परंपरा में निर्गुण भक्ति को ज्ञान और प्रेम के आधार पर पुनः दो भक्ति परंपराओं में विभाजित किया गया। जो एक ज्ञानमार्गी शाखा थी; तो दूसरी प्रेममार्गी शाखा थी। सूफी परंपरा अर्थात् प्रेम तत्व को भक्ति का मूल मानकर जिन मुस्लिम कवियों ने अपनी भक्ति की उन्हें सूफी कवि कहा जाता है। सूफी काव्य परंपरा भक्तिकाल की एक प्रमुख काव्य परंपरा है। इन कवियों ने प्रेम को प्रमुख मानकर लौकिक प्रेम के माध्यम से अलौकिक प्रेम की व्यंजना की और ईश्वर प्राप्ति का जिक्र किया है। यह सूफी कवि ऊनी वस्त्रों को पहनते थें। इनका आचरण सीधा-साधा और पवित्र था। सूफी साहित्य में अनेक कवियों ने अपना योगदान दिया है। जैसे मलिक मोहम्मद जायसी, मुल्ला दाऊद, कुतुबन, मंझन, उस्मान, शेखनबी, कासिमशाह, नूर मोहम्मद, असाईत आदि। इन कवियों ने अपने काव्य में प्रमुखता से प्रेम और ज्ञान, भारतीय हिंदू प्रेम कथाओं का चित्रण, मसनवी शैली, अलौकिक प्रेम की व्यंजना, लोकपक्ष एवं हिंदू संस्कृति का चित्रण, खंडन-मंडन का अभाव, गुरु महिमा, श्रृंगार रस, कथा संगठन एवं कथानक रूढ़ियों आदि का चित्रण मनोहारी रूप से किया है। संत कवियों की तरह इन कवियों ने भी अपने जीवन में गुरु के महत्व को स्वीकारा और अपने काव्य में गुरु महिमा का वर्णन किया। अतः सूफी कवियों के काव्य या साहित्य में गुरु महिमा का चित्रण मिलता है।

सूफी साहित्य में गुरु को अधिक महत्व दिया गया है। सूफी भक्ति परंपरा या संप्रदाय में गुरु को 'पीर' कहा जाता है और शिष्य को 'मुरीद' कहा गया है। सूफी कवि अपने भक्ति मार्ग में प्रेम और ज्ञान को अधिक महत्व देते हैं। इसी प्रेम और ज्ञान की प्राप्ति उन्हें अपने पीर अर्थात गुरु से ही होनी हैं। उनके मतानुसार गुरु ज्ञान का भंडार और मार्गदर्शक होता है। जो अपने शिष्य के अज्ञान के अंधकार को दूर कर उसे मुक्ति दिलाता है और ईश्वर के करीब ले जाता है। गुरु के बिना ज्ञान को प्राप्त करना असंभव है। गुरु का मार्गदर्शन ही शिष्य को सही रास्ते पर ले जाता है। सूफी साहित्य में भी सूफी कवियों ने गुरु को ईश्वर के रूप में ही देखा। इसके अतिरिक्त सूफी कवि गुरु को एक सच्चा मित्र भी मानते हैं। अतः सूफी कवियों ने अपने साहित्य में गुरु महिमा का गान बड़ी लगन से किया है। जिसे निम्नांकित रूप में देखा जा सकता है।

मलिक मोहम्मद जायसी :

मलिक मोहम्मद जायसी निर्गुण भक्ति परंपरा के अंतर्गत आनेवाले प्रेमाश्रयी काव्यधारा के प्रमुख सूफी कवि है। जायसी ने अपने जीवन में गुरु को अधिक महत्व दिया है। वह मानते हैं कि गुरु ही सच्चा मार्गदर्शक है। गुरु ही शिष्य को सच्चे प्रेम के माध्यम से ईश्वर तक ले जाता है। अतः जायसी ने अपने काव्य 'पद्मावत' में गुरु महिमा का गान करते हुए लिखा है -

''गुरु सुआ जेहि पंथ दिखावा,
बिन सद्गुरु को निरगुन पावा।''

अर्थात् जायसी कहते हैं कि गुरु के सुग्गे ने ही मुझे प्रेम रूपी पंथ दिखाया है। वही पथ प्रदर्शक है। गुरु के बिना इस संसार में निर्गुण ईश्वर को कौन प्राप्त कर सकता है। अतः गुरु ही निर्गुण ईश्वर तक पहुँचने का प्रेम मार्ग दिखाता है।

जायसी के गुरु सैयद अशरफ थें। जायसी अपनी रचनाओं में गुरु शिष्य परंपरा का उल्लेख करते हैं। 'पद्मावत' जैसे महाकाव्य के स्तुति खंड में वह अपनी गुरु की वंश परंपरा, संप्रदाय, गुरु रूप की स्थिति और अपने जीवन में गुरु की भूमिका आदि का वर्णन करते हैं। जायसी गुरु महिमा का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि

''सैयद अशरफ पीर पियरा। जेहि मोहि दिन्ह पंथ उजियारा।
लैसा हिएँ प्रेम कर दिया। उठी जोति भा निरमल हिया।
मारग हुत अंधियार असूझे। भा अजोर जान बुझे।
खार समुद्र पाप मोर मेला। बोहित धरम लीन्ह कई चेला।
उन्ह मोर करिअ पोढकर गह। पीएस तीर-घाट जो अहा।''

अर्थात् जायसी कहते हैं कि हमारे गुरु सैयद अशरफ एक प्रिय संत थें। वे मेरे लिए अत्यंत उज्ज्वल और पथ प्रदर्शक बने रहे। उन्होंने मेरे हृदय में प्रेम रूपी दीप जलाकर मेरा हृदय निर्मल और पवित्र कर दिया। मैं उनका शिष्य बनने पर, उनके मार्गदर्शन के द्वारा मुझे मुक्ति का मार्ग मिल गया। मुझे मेरे जीवन का लक्ष्य प्राप्त हुआ। इस तरह जायसी ने अपने काव्य 'अखरावट', 'आखिरी कलाम', आदि में अपने अन्य गुरु शेख मोहमी बुरहान की महिमा का वर्णन भी किया है। आचार्य परशुराम चतुर्वेदी जी जायसी द्वारा शेख मोहमी को अपने गुरु होने का उल्लेख कर उनका वर्णन किया है। उनकी समीक्षा करते हुए परशुराम चतुर्वेदी लिखते हैं कि, शेख बुरहान मोहमी गुरु है, जिनका स्थान कालपी है,जिन्होंने चार बार मक्के की यात्रा की है तथा जो किसी को भी स्पर्श करके उसके पाप दूर कर देते हैं। वही मेरे गुरु हैं और मैं उनका चेला हूँ तथा उन्होंने अपना हाथ मेरे सिर पर रखकर मेरे पापों को धो दिया है और प्रेम के प्याले को स्वयं चखकर उसकी बूँद मुझे भी चखा दी है।

अतः जायसी द्वारा अपने दो गुरु शेख अशरफ तथा शेख बरहन मोहमी को अपने गुरु के रूप में स्वीकारने का उल्लेख मिलता है। इन दोनों के प्रति जायसी ने समान रूप से श्रद्धा का भाव दिखाया है।

मुल्ला दाऊद :

मुल्ला दाऊद एक प्रसिद्ध कवि है। वह अपने काव्य में लौकिक प्रेम के माध्यम से अलौकिक प्रेम की व्यंजना करते हैं। वे भी प्रेम के माध्यम से ईश्वर प्राप्ति चाहते हैं। उन्होंने अपने जीवन में गुरु को अनन्य साधारण महत्व दिया है। उनका अवधी भाषा में लिखा ग्रंथ 'चंदायन' काफी प्रसिद्ध है। उन्होंने ही सूफी काव्य परंपरो की नींव रखी और उसे समृद्ध करने का प्रयास किया। उन्होंने गुरु-शिष्य परंपरा का उल्लेख करते हुए शेख जैनुद्दीन को अपना गुरु माना है। वह उनके मार्गदर्शक एवं आध्यात्मिक गुरु है। 'चंदायन' नामक काव्य में मुल्ला दाऊद अपने गुरु को ईश्वर तुल्य या ईश्वर सामान स्वीकार करते हैं। वह गुरु को प्रेम और ज्ञान का स्रोत मानते हैं। उनकी रचनाओं में गुरु के प्रति समर्पण भाव और भक्ति दिखाई देती है। उनका मानना था कि गुरु के मार्गदर्शन के बिना इस संसार में सच्चा ज्ञान किसी को भी नहीं मिलता। मुल्ला दाऊद ने काव्य रचना के प्रारंभ में ही अपने पैगंबर और गुरुओं का स्मरण किया है। वह गुरु संबंधी कहते हैं कि -

''शेख जैनदी हों पाथिवाला धर्म पंथ जिन्ह पाप गंवा०।''

इस तरह मुल्ला दाऊद ने अपने काव्य 'चंदायन' में गुरु महिमा का चित्रण किया है। जिसमें गुरु को मार्गदर्शक एवं आध्यात्मिक गुरु के रूप में स्वीकार किया है।

मंझन :

मंझन सूफी प्रेमाख्यान परंपरा के कवि हैं। उन्होंने सन 1545 में 'मधुमालती' नामक काव्य की रचना की। उन पर खिज्र खाँ की काफी कृपा थी। उन्होंने अपनी 'मधुमालती' इस रचना में सलीम शाहसुरी और अपने गुरु शेख मुहम्मद गौस और खिज्र खाँ की भारी प्रशंसा की है। सूफी शत्तारी संप्रदाय के संत शेख मुहम्मद गौस उनके गुरु थे। कवि मंझन ने अपनी गुरु परंपरा के बारे में कुछ नहीं बताया। परंतु अपने ह्रदय में गुरु के प्रति होनेवाला विश्वास, सम्मान, स्नेह आदि का जिक्र उन्होंने उनकी एकमात्र रचना 'मधुमालती' में किया है। उन्होंने अपने गुरु को सिद्ध पुरुष बताया है। वह कहते हैं कि मेरे गुरु के कारण ही मुझे ज्ञान और प्रेम की प्राप्ति हुई है। इसी ज्ञान प्राप्ति के कारण ही मंझन आध्यात्मिक जीवन में प्रवृत्त हुए। वह कहते हैं कि,

''प्रेम अमोलिक नग संयसारा।
जेहि जिअं प्रेम आ धनि औतारा।।''

अर्थात् मंझन प्रेम मार्ग से ईश्वर को प्राप्त करना चाहते हैं। जिसके कारण उन्होंने प्रेम को अपने जीवन में सब कुछ माना है। अलौकिक प्रेम का मार्ग उन्हें अपने गुरु से ही मिला है। अतः मंझन गुरु को सिद्ध पुरुष मानते हुए ज्ञान प्राप्ति का भंडार मानते हैं। जिसके कारण मंझन आध्यात्मिक भक्ति मार्ग पर लीन होते हैं।

उस्मान :

उस्मान सूफी काव्य परंपरा के कवि माने जाते हैं। उन्होंने सूफी प्रेमाख्यान काव्य परंपरा में 'चित्रावली' नामक काव्य की रचना की है। इस रचना में उन्होंने जहांगीर के न्यायप्रियता की प्रशंसा, तत्कालीन समाज के उत्सव, पर्व-त्यौहार, रस्म-रिवाज और गुरु के प्रति विचार आदि का सुंदर चित्रण किया है। उस्मान सूफी परंपरा के साथ-साथ भारतीय विचारधारा से भी अधिक प्रभावित थे। उस्मान के गुरु का नाम 'बाबा हाजी' है। वह चिश्ती संप्रदाय से आते हैं। वह एक ऐसे गुरु होने का जिक्र उस्मान करते हैं कि बाबा हाजी हिंदू और मुसलमान दोनों को समान रूप से देखते थें। उन्होंने हिंदू-मुस्लिम के समन्वयवाद पर बल दिया है। उस्मान अपनी रचना 'चित्रावली' में गुरु संबंधी विचार व्यक्त करते हैं। वह बताते हैं कि गुरु अनन्य साधारण होता है। वह सच्चा ज्ञान और मार्गदर्शन का स्रोत होता है। जो अपने ज्ञान और मार्गदर्शन से शिष्यों को आध्यात्मिक उन्नति के मार्ग पर ले जाता है। सूफी कवियों ने प्रेम इस तत्व को महत्वपूर्ण और अनिवार्य माना है। उन्होंने अपनी रचनाओं में अलौकिक प्रेम की अभिव्यक्ति की है। गुरु को हमेशा परम सत्ता का प्रतीक माना है। अर्थात् प्रेम के प्रतीक के रूप में उन्हें स्वीकार किया है। गुरु का प्रेमरूपी ज्ञान ही शिष्य को प्रेम रूपी आध्यात्मिक भक्ति की ओर ले जाता है। उस्मान कहते हैं कि,

''कहत करेज लोहू भा पानी।
सोई जान पीर जिन्ह जानी।।
एक-एक वचन मोति जनु पोवा।
कोऊ हँसा कोऊ सुनि रोवा।''

अर्थात् गुरु ही असली ज्ञानी होता है, जो शिष्य को जीवन की कठिनाइयों के बीच संयम बनाकर रखने की सीख देता है। अतः गुरु साधारण और महान लोगों का फर्क समझने वाला भी होता है।

अमीर खुसरो :

अमीर खुसरो एक महान सूफी संत, कवि और संगीतकार हैं। अमीर खुसरो की पहेलियाँ काफी चर्चित एवं प्रसिद्ध है। हजरत निजामुद्दीन औलिया अमीर खुसरो के गुरु है। अमीर खुसरो ने अपने काव्य में गुरु के प्रति श्रद्धा, प्रेम और समर्पण का भाव व्यक्त किया है। वह अपने गुरु को एक आदर्श मार्गदर्शक मानते हैं। वह अपने गुरु को ईश्वर का स्वरूप मानते हुए गुरु की सेवा और उनके आदेशों का पालन करना चाहते हैं। इसी संबंध में अमीर खुसरों और निजामुद्दीन औलिया के बीच एक कहानी का जिक्र भी किया जाता है। जिसमें अमीर खुसरो गुरु के द्वारा ली गई शिष्य की कसौटी पर खड़े उतरते हैं। जिससे गुरु के प्रति होनेवाली श्रद्धा दिखाई देती है। आज भी गुरु-शिष्य समर्पण भाव का प्रतीक के रूप में गुरु औलिया की मजार के पास ही सत् शिष्य अमीर खुसरो की 'मजार' दिखाई देती है। गुरु के प्रति होनेवाले समर्पण भाव को व्यक्त करते हुए खुसरो कहते हैं कि,

''सतगुरु दाता सब्र के, तू किर्पिन कंगाल।
गुरु-महिमा जाने नहीं, फुंसियौ मोह के जाल।''

अर्थात् सच्चा गुरु सबको देनेवाला होता है। जो सभी को ज्ञान देकर उसका उद्धार करता है। लेकिन सांसारिक मोह में फँसा व्यक्ति गुरु की महिमा को समझ नहीं पाता और वह कंजूस और कंगाल बनता है। अतः इस दोहे में अमीर खुसरो की गुरु के प्रति होनेवाली श्रद्धा और आदर दिखाई देता है। इस तरह अमीर खुसरो भी गुरु को सर्वोपरि मानकर उनके प्रति समर्पित होते हैं।

इन सूफी कवियों के अतिरिक्त कुतुबन, मंझन, शेखनबी, कासिमशाह, असाईत आदि कवियों ने अपने काव्य रचनाओं में गुरु के प्रति होनेवाले अपने विचार प्रकट किए हैं। जिसमें गुरु के प्रति श्रद्धा, प्रेम, समर्पण का भाव आदि दिखाई देता है। गुरु को वे ईश्वर के समान मानते हैं। उन्हें सच्चा मार्गदर्शक, सिद्ध पुरुष, प्रेम और ज्ञान का भंडार मानकर उनकी गुरु महिमा का वर्णन करते हैं। अतः सूफी कवियों की गुरु महिमा पाठकों को भी आदर्श एवं मार्गदर्शक बनी हैं।

2.3.3 गुरु महिमा की विशेषताएँ

प्रस्तावना :

गुरु शिष्य परंपरा हमारे हिंदुस्तान की प्राचीन परंपरा है। गुरु और शिष्य की यह महान परंपरा प्राचीन काल से आज तक चली आ रही है और आगे भी चलती रहेगी। क्योंकि मनुष्य को (साधक को) अपना लक्ष्य पूरा करने के लिए निश्चित रूप से गुरु की ही आवश्यकता होती है। गुरु के बिना कोई भी शिष्य अपने जीवन में लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकता। गुरु अपने शिष्यों को ज्ञान देकर शिष्य के जीवन का अंधकार दूर करता है। गुरु वह होता है, जो शिष्य को सच्चा ज्ञान दें और उसके जीवन में सच्चे मार्ग को दिखाए। गुरु शिष्य को आज्ञान से ज्ञान की ओर ले जानेवाला होता है। इसलिए हर शिष्य गुरु को सर्वोपरि मानता है और गुरु के चरणों में समर्पित होता है। भारतीय गुरु-शिष्य परंपरा में आज तक अनेक विद्वानों, कवियों, संतों, आचार्यों, साहित्यकारों आदियों ने अपनी साहित्यिक अभिव्यक्ति में गुरु महिमा का वर्णन किया है।

गुरु महिमा का अर्थ होता है- गुरु की महत्ता या महानता। गुरु की महिमा में गुरु के गुणों, शिक्षाओं, गुरु ज्ञान, गुरु प्रभाव आदि का वर्णन किया जाता है। गुरु की शिक्षा और ज्ञान का शिष्य के जीवन में महत्वपूर्ण योगदान होता है। अतः गुरु ज्ञान का स्रोत होता है। जिससे शिष्य का जीवन प्रकाशमान होता है। इसीलिए हिंदी

साहित्य में अनेक आचार्यों, विद्वानों, संतों, कवियों, साहित्यकारों ने अपनी साहित्यिक रचनाओं में गुरु महिमा का वर्णन बड़ी तन्मयता एवं श्रद्धा भाव से किया है। जिसके आधार पर हम गुरु महिमा की विशेषताओं को देख सकते हैं।

1. गुरु ज्ञान का स्रोत या ज्ञान का प्रकाशक

गुरु ज्ञान का स्रोत होता है। गुरु के पास सांसारिक ज्ञान का भंडार होता है। वह अपनी अनुभूति एवं शिक्षा के बल पर ज्ञान को परख कर अपने पास रख देता है। जिससे वह आलोकित हो जाता है। अपने इसी ज्ञान रूपी प्रकाश से गुरु अपने शिष्य के जीवन के अंधकार को दूर कर उस दैदिप्यमान बना देता है। गुरु अपने ज्ञान के प्रकाश से शिष्य को मनुष्य के रूप में जीवन जीने के लिए सक्षम बनाता है। गुरु और शिष्य की परंपरा को जोड़कर रखने वाला ज्ञान ही होता है। गुरु ज्ञान के द्वारा ही शिष्य को परमात्मा को देखने की दृष्टि अवगत होती है। हिंदी साहित्य में अनेक संत कवियों ने गुरु को ज्ञान का स्रोत कहा है । उसे ज्ञान का प्रकाशक कहा है। गुरु शिष्य के अज्ञान रूपी अंधकार को दूर कर ज्ञान का प्रकाश फैलता है। कबीर कहते हैं कि,

''गुरु बिन ज्ञान न उपजै, गुरु बिन मिलै न मोष।
गुरु बिन लिखौ न सत्य को, गुरु बिन मैटें न दोष।।''

अर्थात् कबीरदास जी गुरु महिमा का गान करते हुए कहते हैं कि गुरु के बिना ज्ञान को प्राप्त करना असंभव है। जब तक मनुष्य पर गुरु की कृपा नहीं होती तब तक मनुष्य अज्ञान के अंधकार में भटकता हुआ मायारुपी सांसारिक बंधनों में जकड़ कर या फँसकर रहता है। बिना गुरु के सत्य और असत्य का ज्ञान नहीं होता। इस तरह से गुरु-शिष्य परंपरा में तुलसीदास, गुरुनानक, रविदास आदि अनेक कवियों ने गुरु को ज्ञान का भंडार तथा ज्ञान का प्रकाशक माना है। गुरु नानक जी कहते हैं कि -

''गुरु बिन घोर अंधार, गुरू बिनु तरीबुवन नाहीं तारा।''

अर्थात् गुरु के बिना जीवन में घोर अंधकार हैं। गुरु के बिना अंधकार को मिटाया नहीं जा सकता।

2. गुरु का ईश्वर स्वरूप होना या ईश्वर के समतुल्य गुरु का रूप

मध्यकालीन संत कवियों ने अपने जीवन में गुरु को अनन्य साधारण महत्व दिया है। गुरु को सच्चा पथ प्रदर्शक माना हैं। गुरु को ही सर्वोपरि मानकर कई संत कवियों, विद्वानों ने अपने गुरु को ईश्वर के समान माना है, क्योंकि वह कहते हैं कि गुरु ही हमारे जीवन को सँवारता है। गुरु ही ज्ञान और प्रेम के माध्यम से मनुष्य के विकारों को दूर कर देता है और गुरु ही जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करने का मार्ग दिखाता है। अतः गुरु ही ईश्वर है या गुरु ही ईश्वर का स्वरूप होता है। भक्तिकाल के अनेक कवियों ने गुरु को आत्मज्ञान, मोक्ष और भगवान तक पहुँचने का माध्यम बताया है। संत कबीर दास जी कहते हैं कि -

''गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागू पाय।
बलिहारी गुरु आपने, जिन गोविंद दियो बताय।।''

अर्थात् जब गुरु और भगवान दोनों मेरे सामने खड़े हो तो, मैं सबसे पहले गुरु को प्रणाम करुँगा, क्योंकि उन्होंने ही मुझे ईश्वर के दर्शन कराए हैं। अतः कबीर, मीरा, जायसी, अमीर खुसरो, कुतुबन आदियों ने गुरु को ईश्वर के स्वरूप ही माना है। जिसकी अभिव्यक्ति उनकी साहित्यिक रचनाओं में दिखाई देती है।

3. मोक्ष या मुक्ति के उद्धारक :

भक्तिकालीन सभी कवियों ने गुरु के महत्व को स्वीकारते हुए अपनी-अपनी काव्य रचनाओं में गुरु महिमा का गान किया है। वे गुरु को ज्ञान का स्रोत एवं मोक्ष या मुक्ति का मार्ग मानते हैं। गुरु ही शिष्यों को जीवन में मोक्ष या मुक्ति दे सकता है। गुरु ही आत्मा परमात्मा को जोड़ता है। इसलिए गुरु ही जीवन का सच्चा उद्धारक होता है। वह मुक्ति दिलाता है। मनुष्य अपने जीवन में निश्चित रूप से मोक्ष प्राप्ति चाहता है । उसके जीवन का मूल लक्ष्य ही मोक्ष प्राप्ति होता है। जिसको वह गुरु के माध्यम से पूरा करता है। कबीर, सूर, तुलसी, जायसी, नामदेव, नरहरीदास,सहजाबाई, मीरा आदि कवियों ने गुरु को मुक्ति या मोक्ष देने वाला कहा है। तुलसीदास कहते हैं कि,

''बंधु गुरु पद कुंज कृपा सिंधु नर रूप हरि।
महामोह तम पुंज जासु बचन रवि कर निकारी।''

अर्थात् गुरु नर रूप में हरि है। उसके ज्ञानरूपी वचनों से जीवन का अंधकार दूर होता है। जिससे आत्मज्ञान होकर शिष्य के मोक्ष का द्वार खुलता है।

संत नामदेव कहते हैं कि मैं अपने गुरु के चरणों पर बलिहारि हो जाता हूँ, क्योंकि उनके कारण ही मुझे परम पद अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति हुई है।
जैसे -

''गुरु के चरन कमल बलिहारि।
जिनसे परम पद् लह्यो हमारी।।''

4. निस्वार्थ और प्रेम का प्रतीक :

भक्ति कालीन संत कवियों ने अपने गुरु की महत्ता का वर्णन करते हुए गुरु को केवल ज्ञानदाता और मार्गदर्शक मानने के बजाय उन्हें निस्वार्थ तथा प्रेम और करुणा का प्रतीक माना है। गुरु को निस्वार्थ, सेवा, प्रेम, करुणा आदि का प्रतीक मानना भक्तिकालीन कवियों की एक प्रमुख धारणा रही है। संत शिरोमणि तुलसीदास गुरु की निस्वार्थ वृत्ति और प्रेम को लेकर कहते हैं कि,

''गुरु कृपा अहो भाग्य हमारें।
जो बिनु मोल बिके रघुवीर के
सहज सरल अनुराग सवारें।।''

अर्थात् गुरु की कृपा ही हमारे लिए परम सौभाग्य की बात है। गुरु बिना किसी स्वार्थ के, प्रेम और सरलता से ईश्वर से जोड़ता है। संत रविदास जी भी कहते हैं कि,

''गुरु साँचो दाता, प्रेम बिना जो बोले नहीं।
नहीं लोभ देखे नहीं प्रेम-पंथ ही खोले सही।।''

अर्थात् सच्चा गुरु वहीं होता है जो अपने शिष्यों को निस्वार्थ प्रेम से बोलता है, न वह शिष्य से किसी लोभ की आशा करता है, न किसी मान-सम्मान की। वह केवल अपने शिष्यों को ज्ञान देकर प्रेम का मार्ग दिखाता है। अतः उपर्युक्त तुलसीदास और रविदास के दोहों में गुरु की निस्वार्थ वृत्ति, प्रेम और करुणा के दर्शन होते हैं।

5. सच्चा मार्गदर्शक या पथप्रदर्शक :

गुरु अर्थात् अंधकार को दूर करने वाला। गुरु अपने ज्ञानरूपी दीपक से शिष्य के जीवन का अंधकार, उलझन, समस्या आदि को दूर कर उसे सच्चा मार्गदर्शन करता है। गुरु ही सच्चा मार्गदर्शक है। जो आत्मा को सत्य, प्रेम और मोक्ष का मार्ग दिखाता है और उसे जीवन पथ पर निरंतर रूप से चलने के लिए शिष्य को प्रेरित करता है। गुरु अपने सच्चे मार्गदर्शन से आत्मा को परमात्मा तक ले जाता है। गुरु ही अपने सच्चे मार्गदर्शन से जीव को अपने लक्ष्य में सफलता दिलाता है। अतः गुरु एक सच्चा मार्गदर्शक एवं पथ प्रदर्शक होता है। संत तुलसीदास कहते हैं-

''मोहि पथ देई नाथ निज नीकी।
गुरु पद पंकज राखऊँ और सीस।''

अर्थात् हे नाथ! (गुरु) मुझे आप सच्चा मार्ग दिखाइए। मैं अपने गुरु के चरणों में मस्तक न्यौछावर करता हूँ।

कृष्णभक्त कवि सूरदास जी गुरु को ज्ञान के प्रदाता और सच्चे मार्गदर्शक मानते हैं। सूरदास जी अपने पदों में इसका वर्णन करते हुए लिखते हैं कि,

''गुरु बिन भक्ति न होई, ग्यान न उपजै काहू।
गुरु ही सकल सुधा सागर, जुगन-जुगन कराहू।''

अर्थात् गुरु के बिना किसी भी प्रकार की भक्ति संभव नहीं है, न ही गुरु के बिना ज्ञान उत्पन्न होता है। गुरु वह अमृत का सागर है जो युगों- युगों तक शिष्य को जीवन के सत्य के मार्ग को दिखाता है। वही सत्य-असत्य ज्ञान को दिखाकर सत्य के मार्ग पर चलने का मार्गदर्शन करता है।

इसी तरह जायसी,दादू दयाल, गुरु नानक, नूर मोहम्मद, कासिमशाह, मीराबाई, आदियों ने गुरु को सच्चा मार्गदर्शक माना है।

6. आध्यात्मिक विकास की ओर ले जानेवाला :

गुरु सर्वोपरि होता है। गुरु ही सब कुछ है। गुरु ही हमें भक्ति के मार्ग की ओर उन्मुख करता है। गुरु ही एक ऐसा माध्यम है, जो हमें आध्यात्मिक विकास की ओर ले जाता है। गुरु अपने ज्ञान, प्रेम और मार्गदर्शन से शिष्य या साधक को ज्ञानी, पवित्र, सदाचार से युक्त कर भक्ति मार्ग पर ले जाता है। भक्ति और आध्यात्म का गहरा संबंध होता है। अपने शिष्य के मन में पनपी भक्ति और आध्यात्मिकता को अधिक विकसित कर चरम शिखर पर ले जाने में गुरु अपनी अनन्य साधारण भूमिका निभाता है। भक्तिकालीन सगुण और निर्गुण कवियों ने अपने गुरु की महिमा का वर्णन करते हुए गुरु को आध्यात्मिक विकास का दूत बताया है। कवि सूरदास, मुकुलदास, जायसी, मुल्ला दाऊद आदि कवियों ने गुरु को आध्यात्मिकता का दूत कहा है।
संत कबीर दास जी कहते हैं कि,

''सद्गुरु मिला तो ज्ञान मिला, चूक गई सब भ्रांति।
नयन प्रगासे हरि मिलन मिटी गई अज्ञानता भ्रांति।''

अर्थात् कबीर कहते हैं कि जब मुझे सच्चे गुरु का सानिध्य मिला तब मुझे आत्मज्ञान की प्राप्ति हुई। जिससे सभी भ्रम दूर हो गए साथ ही आँखों में आध्यात्मिक प्रकाश आया और ईश्वर से मिलन संभव हुआ। अतः गुरु आध्यात्मिक विकास के पथ का मार्गदर्शक होता है।

7. गुरु के प्रति समर्पण भाव :

मध्यकालीन कवि अपनी रचनाओं में गुरु महिमा का गान करते हैं। उनके काव्य में गुरु के प्रति सम्मान, स्नेह दिखाई देता है। साथ ही वह अपने गुरु को ज्ञान देनेवाला और सच्चा मार्गदर्शक मानते हैं। परंतु उनमें गुरु के प्रति समर्पण भाव दिखाई देता है। अपने गुरु के लिए वह सब कुछ न्योछावर कर देने की बात भी करते हैं। गुरु को सर्वोपरि मानते हुए उसे ईश्वर से भी बढ़कर स्थान देते हैं। कबीर, जायसी, तुलसी, मीरा, दादू दयाल, नानक आदियों के काव्य में गुरु के प्रति समर्पण भाव की अभिव्यक्ति समग्रता से हुई है। सगुण काव्यधारा के कृष्णभक्त कवि संत मीराबाई जी कहती हैं कि,

''पायो जी मैंने राम रतन धन पायो।।
वस्तु अमोलिक दी मेरे सतगुरु, कृपा कर अपनायो ।।
जनम- जनम की पूंजी पाई, जग में सबी खुमायो ।।
खर्च ना खूटे, चोर ना लूटे, दिन-ब-दिन बढ़त सवायो ।।
सत की नाव खेवटिया सतगुरु, भवसागर तरवयो ।।
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर, हर्ष-हर्ष जस गयो ।।''

अर्थात् मीरा अपने भक्ति में लीन होकर गुरु के प्रति अपनी भावनाएँ व्यक्त करती हुई कहती है कि मैंने अपने जीवन में रामरूपी रत्न का धन पाया है। यह अमूल्य वस्तु (भक्ति) मुझे सद्गुरु की कृपा से ही मिली है। जिसे मैंने अपनाया है। यह मेरे जन्मों-जन्मों की पूँजी है। यह न खर्च होती है न उसे चोर चुरा सकता है। बल्कि यह भक्तिरूपी धन दिन-ब-दिन सवा गुना बढ़ता ही जाता है। मेरे जीवन रूपी सत्य की नाव का खेवईया गुरु ही है। जिसने मुझे मोह-माया के सागर से पार किया है। अतः इस पद में मीरा का गुरु के प्रति समर्पण भाव दिखाई देता है। संत नामदेव समर्पण भाव से युक्त होकर कहते हैं कि -

''गुरु सम नहीं दाता।''

इस तरह मध्यकालीन संत कवियों की रचनाओं में गुरु के प्रति समर्पण भाव की अभिव्यक्ति हुई है।

8. विकृतियों के विनाशक और संस्कारों के निर्माता :

गुरु हमेशा शिष्य का भला सोचते हैं और अपने ज्ञान और मार्गदर्शन से उन्हें सच्चा और अच्छा रास्ता दिखाते हैं। गुरु अपने ज्ञान और शिक्षा से शिष्य के मन का मैल और मन की विकृतियों को दूर करते हैं। उन्हें सत्य, प्रेम, संयम और विवेक से रहने के संस्कार देते हैं तथा गुरु अपने शिष्य की विकृतियों का दूर कर उन पर अच्छे संस्कार करते हैं। इसलिए गुरु विकृतियों को दूर करने वाला और संस्कारों को निर्माण करने वाला होता है। कबीर अपने दोहों में कहते हैं कि,

''यह तन वीष की बेलरी, गुरु अमृत की खान।
शीश दियो जो गुरु मिले, तो भी सस्ता जान।।''

कबीर कहते हैं कि यह शरीर विष से अर्थात् विकृतियों से भरा हुआ है और गुरु अमृत की खान है। अर्थात् गुरु विकृतियों को मिटाने का ज्ञान और संस्कार रूपी अमृत हैं। इसलिए मनुष्य के शरीर में विष के समान विकृतियों को गुरु अपने ज्ञान और संस्कारों के अमृत से दूर करता है। कबीर आगे कहते हैं कि शिष्य को अपना सीर देने के बदले अगर सच्चा गुरु मिले, तो यहा सौदा (व्यवहार) बहुत ही सस्ता हो सकता है। इस तरह कबीर गुरु की महिमा का गान करते हुए उसे विकृतियों का विनाशक और संस्कारों का निर्माता कहते हैं।

9. प्रेरणा स्रोत :

गुरु शिष्य के लिए एक शिक्षक होता है। जिस प्रकार एक कुम्हार मिट्टी के गोले को मटके का आकार देकर उसे तैयार करता है। उसी प्रकार गुरु अपने ज्ञान और शिक्षा से शिष्यों को तैयार करता है। उसे अच्छी शिक्षा और संस्कारों से सक्षम बनाता है। शिष्य अपने गुरु द्वारा दिए निर्देशों पर चलता है। शिष्य का गुरु के प्रति विश्वास, प्रेम, श्रद्धा होती है। शिष्य गुरु को सर्वोपरि मानता है। उसे ईश्वर से बढ़कर स्थान देता है। शिष्य उसे ईश्वर से बढ़कर स्थान देता है। जब शिष्य दुविधा में होता है या कोई बात समझ नहीं पाता तब गुरु ही उसे सच्चा मार्गदर्शन करते हैं और शिष्यों को समझाकर दुविधा से बाहर निकालने हैं। अतः गुरु शिष्य के लिए एक आदर्श और प्रेरणा होता है। जो शिष्य में जीवन के प्रति प्रेरणा निर्माण करता है। इसलिए गुरु को प्रेरणा और उपदेश देनेवाला कहते हुए संत नामदेव कहते हैं कि,

''गुरु सम नहीं दाता, कोई करि करि भक्ति दिखाई।
गुरु ही देव, गुरु ही गोविंद, गुरु बिना नहीं ढाई।।''

अर्थात् गुरु ही सच्चा प्रेरणा स्रोत है। उसके समान देनेवाला कोई नहीं है। क्योंकि भक्ति का मार्ग तो उन्होंने ही दिखाया है जो एक आदर्श और प्रेरणा है। गुरु ही ईश्वर है, गुरु बिना कोई भी बात संभव नहीं है।

इस तरह मध्यकालीन कवियों ने गुरु को प्रेरणा स्रोत के रूप में स्वीकार किया है। वे उनका बार-बार स्मरण करते हैं और अपने लक्ष्य के रास्ते पर गुरु को प्रेरणा स्रोत मानते हुए निकलते हैं।

इस तरह हिंदी साहित्य के मध्यकालीन कवियों ने अपने काव्य में गुरु महिमा का गान किया है। जिसमें उपयुक्त विशेषताओं के साथ-साथ गुरु की अनिवार्यता, कठिनाइयों में सहायक, पथ प्रदर्शक, गुरु-शिष्य परंपरा, गुरु का महत्व आदि विशेषताएँ भी पाई जाती हैं।

2.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न।

अ) निम्नलिखित वाक्यों के नीचे दिए गए विकल्प में से उचित विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।

1. **भारत में गुरु शिष्य परंपरा... काल से चली आ रही है।**
   क) मध्यकाल ख) ऐतिहासिक ग) प्राचीन घ) आधुनिक
2. **मध्यकालीन संत कवियों ने अपने काव्य में .... को सर्वोपरि माना है।**
   क) माता-पिता ख) गुरु ग) शिष्य घ) ईश्वर
3. **कबीरदास जी के गुरु......थें।**
   क) रामानंद ख) विसोबा खेचर ग) रविदास घ) नामदेव
4. **संत तुलसीदास जी के गुरु का नाम .....था।**
   क) रामानंद ख) विसोब खेचर ग) नरहरि दास घ) रविदास
5. **कृष्णभक्त कवि सूरदास जी के गुरु ....जी थें।**
   क) वल्लभाचार्य ख) दादू दयाल ग) नरहरि दास घ) रामानंद

6. संत मीराबाई के गुरु का नाम..... था।

क) रविदास ख) रामानंद ग) नामदेव घ) कबीर

7. संत रविदास ...... के शिष्य थें।

क) रामानंद ख) कबीर ग) दादू दयाल घ) नरहरिदास

8. लोकोक्तियों के अनुसार दादू दयाल के गुरु ...... थें।

क) बुड्डून बाबा ख) कबीर ग) सहजाबाई घ) गुरु नानक

9. विसोबा खेचर के शिष्य ....थें।

क) मीराबाई ख) नामदेव ग) कबीर घ) रविदास

10. संत तुलसीदास की महत्वपूर्ण रचना....... है।

क) पद्मावत ख) सूरसागर ग) रामचरितमानस घ) गुरु ग्रंथ साहब

11. संत मुकुलदास जी के आध्यात्मिक गुरु .....है।

क) मुरार स्वामी ख) कबीर ग) दादू दयाल घ) रामानंद

12. गुरु .... दूर करनेवाला होता है।

क) अंधकार ख) गरीबी ग) अमीरी घ) प्रकाश

13. सूफी कवि .....है।

क) निर्गुणवादी ख) सगुणवादी ग) आधुनिकतावादी घ) जातिवादी

14. प्रेमाश्रयी शाखा में सूफी कवियों ने लौकिक प्रेम के माध्यम से..... प्रेम की व्यंजना की।

क) व्यक्तिगत ख) सामूहिक ग) लौकिक घ) अलौकिक

15. सूफी संप्रदाय में गुरु को.... कहते हैं।

क) गुरु ख) पीर ग) पैगंबर घ) स्वामी

16. मलिक मुहम्मद जायसी की प्रसिद्ध रचना..... है।

क) सूरसागर ख) रामचरितमानस घ) मधुमालती घ) पद्मावत

17. सूफी संप्रदाय में शिष्य को ....कहते हैं।

क) मुरीद ख) गरीब ग) साधक घ) विद्यार्थी

18. जायसी के गुरु ...... थें।

क) सैयद अशरफ ख) शेख जैनुद्दीन ग) खिज्र खां घ) शेख मोहम्मद गौस

19. मुला दाऊद की महत्वपूर्ण रचना का नाम ...... है।

क) चंदायन ख) मधुमालती घ) पद्मावत घ) चित्रावली

20. सूफी कवि 'उस्मान' के गुरु ..... है।

क) हाजी बाबा ख) सैयद अशरफ ख) खिज्र खां घ) शेख मोहम्मद गौस

21. उस्मान के गुरु हाजी बाबा.....संप्रदाय से आते हैं।

क) चिश्ती ख) सुहारवर्दी ग) कादरी घ) नक्शबंदी

22. अमीर खुसरो के गुरु का नाम ...... है।

क) हजरत निजामुद्दीन औलिया ख) बाबा हाजी ख) सैयद अशरफ घ) खिज्र खां

23. ......गुरु महिमा की विशेषताएँ हैं।

क) समर्पण ख) ज्ञान का स्रोत क) मोक्ष के उद्धारक घ) उपर्युक्त सभी

24. गुरु .... होता है।

क) सच्चा मार्गदर्शक ख) स्वार्थी ग) कृतघ्न घ) ठगनेवाला

25. गुरु शिष्य का...... विकास भी करता है।

क) आर्थिक ख) धार्मिक ग) शैक्षिक घ) आध्यात्मिक

2.5 पारिभाषिक शब्द

1. पीर -गुरु
2. गुरु -ज्ञान देनेवाला, अंधकार को दूर करनेवाला।
3. मुरीद- शिष्य
4. आत्मा- जीव
5. परमात्मा- ईश्वर
6. साधक- शिष्य

2.6 स्वयं अध्ययन प्रश्न के उत्तर :

1. ग) प्राचीन	2. ख) गुरु	3. क) रामानंद	4. ग) नरहरि दास
5. क) वल्लभाचाय	6. क) रविदास	7. क) रामानंद	8. क) बुड्डन बाबा
9. ख) नामदेव	10. ग) रामचरितमानस	11. क) मुरार स्वामी	12 क) अंधकार
13. क) निर्गुणवादी	14. घ) अलौकिक	15. ख) पीर	16. घ) पद्मावत
17. क) मुरीद	18. क) सैयद अशरफ	19. क) चंदायन	20. क) हाजी बाबा
21. क) चिश्ती	22. क) हजरत निजामुद्दीन औलिया		23. घ) उपर्युक्त सभी
24. क) सच्चा मार्गदर्शक	25. घ) आध्यात्मिक		

2.7 सारांश :

1. गुरु शिष्य या साधक के जीवन का अंधकार दूर करनेवाला होता है। वह अपने ज्ञान रूपी प्रकाश से शिष्य या साधक के जीवन का ज्ञान रूपी अंधकार दूर कर उसे अवलोकित करता है।

2. गुरु-शिष्य परंपरा भारतीय संस्कृति में प्राचीन काल से विद्यमान है। जिसमें गुरु की महत्ता, गुरु की स्तुति, गुरु का स्मरण, नमन की परंपरा, कृतज्ञता का इतिहास आदि विद्यमान है। अतः हमारी प्राचीन परंपराएँ, संस्कृति एवं आस्थाओं में गुरु शिष्य-परंपरा शीर्षस्थ है । आज भी यहाँ अबाधित रूप से चली आ रही है।

3. मध्यकालीन संत कबीर संत तुलसीदास, संत सूरदास, संत मीराबाई, संत रविदास, संत दादू दयाल, संत गुरु नानक, संत नामदेव, संत जगदनंदन महाराज, संत सहजाबाई आदि कवियों ने अपनी रचनाओं में गुरु की महिमा का चित्रण बड़ी तन्मयता और श्रद्धा भाव से किया है।

4. मध्यकालीन संत कवियों ने गुरु महिमा का वर्णन करते हुए गुरु को सर्वोपरि माना है। गुरु को अपने माता-पिता तथा ईश्वर से भी बढ़कर माना है और उसे ईश्वर प्राप्ति का सच्चा मार्गदर्शक बतलाया है। वह मानते हैं कि गुरु के बिना इस संसार में कुछ भी संभव नहीं है।

5. मध्यकालीन संत कवियों ने निर्गुण और सगुण भक्ति मार्ग में गुरु को अनन्य साधारण महत्व दिया है। वह गुरु को मुक्ति या मोक्ष का द्वार मानते हैं।

6. मध्यकालीन सूफी कवि जायसी, कुतुबन, मुल्ला दाऊद, मंझन, उस्मान, असाईत, नूर मुहम्मद, कासिम शाह, अमीर खुसरो आदि कवियों ने अपनी रचनाओं में गुरु की महिमा का गान प्रेम और श्रद्धा से किया है। वह अपने गुरु को ज्ञान का भंडार मानते हैं। इस तरह से वे अपने गुरु को सच्चा मार्गदर्शक और आध्यात्मिक विकास का साधन मानते हैं।

7. सूफी कवियों ने अपने काव्य में लौकिक प्रेम के माध्यम से अलौकिक प्रेम की व्यंजन की। यह सूफी कवि निर्गुणवादी है। वह गुरु के द्वारा प्राप्त ज्ञान और प्रेम से भक्ति मार्ग पर चलकर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते हैं। संत कवियों की तरह सूफी कवियों ने भी गुरु को सर्वोपरि मानकर अपने जीवन में उन्हें अनन्य साधारण महत्व दिया है।

8. भारत में गुरु-शिष्य परंपरा अति प्राचीन है। इन सभी कवियों, विद्वानों, आचार्य ने अपनी रचनाओं में गुरु महिमा का गान किया है। जिसमें अनेक विशेषताएँ पाई जाती हैं। जैसे - गुरु ज्ञान का स्रोत या ज्ञान का प्रकाशक, गुरु संस्कारों का निर्माता, गुरु ईश्वर से बढ़कर, गुरु मुक्ति को प्रदान करनेवाला, गुरु निस्वार्थी और प्रेम का प्रतीक, गुरु सच्चा मार्गदर्शक, गुरू आध्यात्मिक विकास की ओर ले जानेवाला, गुरु कठिनाइयों में सहायक, गुरु प्रेरणास्रोत, गुरु विकृतियों का विनाशक, गुरु की अनिवार्यता, गुरु शिष्य-परंपरा, समर्पण, गुरु का महत्व आदि विशेषताएँ पाई जाती हैं।

2.8 स्वाध्याय :

अ) लघुत्तरी प्रश्न ।

1. मध्यकालीन संत कवियों की काव्य रचनाओं में चित्रित गुरु महिमा का वर्णन संक्षेप में कीजिए।
2. मध्यकालीन सूफी कवियों की रचनाओं में वर्णित गुरु महिमा का चित्रण संक्षेप में कीजिए।
3. गुरु महिमा की किन्हीं तीन विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न ।

1. संत कवियों की रचनाओं में चित्रित गुरु महिमा का वर्णन कीजिए।
2. सूफी कवियों के साहित्य में चित्रित गुरु महिमा का वर्णन कीजिए।
3. गुरु महिमा की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

2.9 क्षेत्रीय कार्य ।

1. महाराष्ट्रीयन संत कवियों की रचनाओं में चित्रित गुरु महिमा को पढ़िए।
2. मध्यकालीन संत कवि और सूफी संत कवियों की गुरु महिमा का तुलनात्मक अध्ययन करें।

2.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

गुरु महिमा (काव्य संकलन) : संपा. हितेश रंजन

❑❑❑